SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:55, Issue: 04,
September-2024, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

सितंबर-2024
रु.20/-

श्री पद्मावती देवीजी का पवित्रोत्सव, तिरुचानूर
(दि. 16-09-2024 से दि. 18-09-2024 तक)

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव

2024 अक्तूबर 04 से 12 तक

08-10-2024 मंगलवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

04-10-2024 शुक्रवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

09-10-2024 बुधवार
दिन - हनुमन्तवाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

05-10-2024 शनिवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

10-10-2024 गुरुवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

06-10-2024 रविवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

11-10-2024 शुक्रवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

07-10-2024 सोमवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

12-10-2024 शनिवार
दिन - चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-१८)

इस नाश रहित, अप्रमेय, नित्यस्वरूप जीवात्मा के ये सब शरीर नाशवान् कहे गये हैं। इसलिये हे भरतवंशी अर्जुन! तू युद्ध कर।

नारायणाच्युतानंत निन्नोक चोट
कोरि वेदकनेल वीरिकल्ल कंटिवो ॥नारायणा॥

पोलसि नी रूपमु श्रुतुललो जेप्पुगानि
बलिमि नाचार्युडैते प्रत्यक्षमु
पलिकि नी तीर्थमु भावनलंदेगानि
अल नी दासुल तीर्थमरचेत निदिवो ॥नारायणा॥

नी यानतुलेन्नडु नेमु तेलियमु गानि
मा आचार्युनि माट मंत्रराजमु
कायमुलो नीवुंडेदि कडुमरुगुलु गानि
ईयेड नी परिकरमन्निटा नुन्नदिवो ॥नारायणा॥

अरिदि नी वंदनमोकर्चावतारमुन गानि
गुरु परंपरनैते कोट्लायबो
हरि निन्नु श्री वेंकटाद्रि ने जूचिति गानि
परमुन इहमुन पंचि चूपे नितडु ॥नारायणा॥

गुरु (आचार्य) को भगवान से अधिक महिमावान माना गया है। गुरु की महत्ता को सिद्ध करने के लिए अपने जीवन में घटित कुछ अनुभवों का विवरण देते हैं। सर्वाधार, नाश रहित तथा अंत रहित परमात्मा के स्वरूप के बारे में उन्हें गुरु के द्वारा ही अवगत हुआ है। भले ही श्रुतियों में भगवान के रूप का वर्णन उपलब्ध है, लेकिन परमात्मा स्वरूपी, आचार्य स्वयं उनके सामने उपस्थित हैं। गुरु को पूरी तरह जान लें, तो परमात्मा को जान लेना अत्यंत सुलभ है। हे परमात्मा! आपकी आज्ञाओं को तो हमने सुना ही नहीं, लेकिन गुरु की आज्ञा तो हमारे लिए परम पवित्र मंत्र के समान है। आप तो कहीं दूर पर हैं, लेकिन आपका उपकरण, गुरु तो हमारे सामने ही हैं। आपके अर्चावतार को तो हम एक वंदन मात्र समर्पित कर सकते हैं, लेकिन आचार्य परंपरा कोटि-कोटि संख्या में होने के कारण कोटि-कोटि वंदन उन्हें समर्पित कर सकते हैं। हे स्वामी! केवल वेंकटाद्रि पर आपका दर्शन होता है, लेकिन आचार्य तो इहलोक व परलोक दोनों में साथ देते हैं। आचार्य (गुरु) की विशिष्टता यही है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान
श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसाद ट्रस्ट

तिरुमल, तिरुचानूर में हजारों की संख्या में भक्तों को प्रतिदिन अन्नप्रसाद वितरण की बात भक्तों को विदित ही है। अब ति.ति.दे अन्नप्रसाद ट्रस्ट भक्तों, दाताओं को दान देने का अवसर देना चाहता है। इसलिए एक दिन दान की योजना प्रवेश कर रहा है।

एक रोजाना खर्च -

1. एक दिन - 38 लाख (सितंबर, 2024 तक मात्र ही यह सुविधा है)
2. अल्पाहार - 8 लाख
3. मध्याह्न भोजन - 15 लाख
4. रात्रि भोजन - 15 लाख

तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का अन्नदान ट्रस्ट इस नकद को दाताओं से स्वीकार करने के लिए सिद्ध हो रहा है। दाताओं - व्यक्तियों/कंपनियों/संस्थाओं/ट्रस्टों/संयुक्त ढंग से भी इस ट्रस्ट को दान दे सकते है। अपने मर्जी के अनुसार सूचित एक दिन पर अन्नदान कर सकती है। और दाता का नाम भी अन्नदान केंद्र में डिसूप्ले होता है। दाताओं को ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित सुविधाएँ दी जायेगी।

अन्य विवरण के लिए संपर्क करें -

उप कार्यकारी अधिकारी (डोनार सेल), आदिशेषु विश्रांति भवन,

ति.ति.दे., तिरुमल।

वेबसाइट - cdmc.ttd@tirumala.org / dyeodonorcell.ttd@tirumala.org

दूरभाषा - 0877-2263001 (24/7)

0877-2263472 (कार्यालय समय में)

(सूचना - उपर्युक्त विषयों पर परिवर्तन होनी की संभावना है।)

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-55 सितंबर-2024 अंक-04

विषयसूची

कल्हल्ली श्री भूवराहनाथ स्वामी मंदिर	प्रो.बी.गायत्री	07
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	09
गणेशायनमः	श्री वेमुनूरि राजमौलि	12
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	15
श्रीहरि विष्णु का वामन अवतार	श्रीमती प्रीति ज्योतिन्द्र अजवालिया	19
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	22
हिडिंबा	डॉ.के.एम.भवानी	25
अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायक का ब्रह्मोत्सव	डॉ.जी.शेक षावली	31
अनंत पद्मनाभ व्रत	श्री ज्योतिन्द्र के अजवालिया	31
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	35
''वैदिक गणित में वर्ग''	डॉ.वड्डी जगदीश	38
अवधूत उपाख्यान	श्री ब्रह्मानन्द प्रधान	41
'गाजर' के स्वास्थ्य लाभ	डॉ.सुमा जोषि	44
सितंबर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - भगवान की आराधना में बहुत शक्ति है - ध्रुव	डॉ.जी.शेक षावली	48
चित्रकथा - भगवान बालाजी की गवाही	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 26		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी जी।
चौथा कवर पृष्ठ - तिरुपति, श्री गोविंदराजस्वामी जी।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

भाद्रपद माह - पितृ प्रीतिकर माह

'मातृ देवो भव' - 'पितृ देवो भव'

हमारे हिंदू धर्म में माता-पिता को ईश्वर से भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया हैं। त्रिमूर्ति के रूप में उनकी पूजा करने की उच्च संस्कृति से गौरवान्वित स्थान दिया है। जो लोग माता-पिता को पसंद नहीं करते है, उन्हें वह परमेश्वर भी क्षमा नहीं करता है।

लोकपूज्य माता-पिता भगवान शिव-पार्वती का भक्ति प्रपत्ति से परिक्रमा करने के कारण विनायक को गण का अध्यक्ष पद और विघ्नेशादिपत्य दिया गया। इसलिए मनुष्य पितृ देवताओं का आराधन तथा दीक्षाबद्ध जीवन बिताने के लिए कुछ नियम हमारे शास्त्र में सूचित किया गया है। चांद्रमान के अनुसार पूर्णिमा के दिन चंद्र का पूर्वाभाद्र या उत्तराभाद्र नक्षत्र के समीप में संचार करने के कारण उस माह को 'भाद्रपद माह' के नाम से व्यवहार करते है।

इसी माह में ही श्री महाविष्णु के दशावतार में से 'वराह' और 'वामन' अवतार हुए थे। 'सुवर्णगौरीव्रत', 'ऋषिपंचमी व्रत', 'अनंत पद्मनाभ व्रत' जैसे व्रत भी इस महीने में मनाया जाता है। समय के अनुसार उन व्रतों या उत्सव को मनाना उचित है। परंतु, भाद्रपद बहुल पक्ष पूरा समय 'पितृ देवता आराधन' के लिए श्रेष्ठ है। शुक्ल पक्ष (पाड्यमी से पूर्णिमा तक) कई व्रत आचरण के लिए अत्यंत शुभ काल है। प्रत्येक अनुष्ठान में प्रथम पूजा स्वीकारने वाले गणेशजी का 'गणेश चतुर्थी' व्रत इस पक्ष में ही आता है।

प्रथम दैव गणपति किसी भी कार्य में अवरोध को दूर कर सिद्धि, बुद्धि (समृद्धि) को प्रसाद करने वाले दैव है। 'गणपति' का उपासन करना वेद संप्रदाय है। विघ्न नाशन गणपति भगवान को 'विघ्न संहारक' के रूप में आराधन करते है। गजवदन 'ओं'कार का प्रतीक है। सभी शब्दों के लिए आदिमूल शब्द ओंकार है। इसलिए प्रथम दैव गजवदन है। वेदों के अनुसार मंत्र गणों को, जीव गणों को अधिपति परमात्मा गणपति है। इन्हीं को पूजा करके, आशीष पाना हमारा कर्तव्य है।

प्रत्येक माह में प्रत्येक दैव का आराधन करने का संप्रदाय हमारे सनातन धर्म में है। नियम के अनुसार भाद्रपद माह में पितृ देवता को अधिक प्राधान्य दिया है। पितृ देवता को मंत्र पूर्वक श्राद्धकर्म का निर्वहण कर उन्हीं को उत्तम लोक उपलब्ध कराने के लिए ऐसे विधियों का पालन करना चाहिए।

भाद्रपद माह में बहुल पक्ष पूर्णिमा के बाद पाड्यमी से अमावास्या तक 15 दिनों का समय को 'पितृ पक्ष' या 'महालय पक्ष' कहते हैं। इस समय पितृ देवता आराधना अत्यन्त प्रीतिकर है। इस समय में सभी वर्ग लोग अपने दिवंगत पूर्वजों को स्मरण कर पितृ देवता का श्राद्धकर्म को विधि पूर्वक अवश्य करना चाहिए। इस समय में शुभ कार्य करना श्रेयस्कर नहीं है। इसलिए हमारे सनातन धर्म और संप्रदाय का परिरक्षण करना हमारा कर्तव्य है। समस्त लोकों को संरक्षण करेंगे।

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवंतु।

कल्लहल्ली श्री भूवराहनाथ स्वामी मंदिर

- प्रो. बी.गायत्री

वराह जयंती के अवसर पर...

हमारे भारत देश में कई सारे दिव्य क्षेत्र हैं। उन्में से एक है ''कल्लहल्ली श्री भूवराहनाथ स्वामी मंदिर।'' लगभग 2,500 साल पुराना यह मंदिर कर्नाटक राज्य, मन्दिय जिला में पांडुपुरा नामक स्थल से लगभग 32 कि.मी. दूरी पर हेमवती नदी तट पर स्थित कल्लहल्ली नामक एक छोटे गाँव में है।

स्थल पुराण :

पुराणों के अनुसार ''पुण्य क्षेत्र'' नामक इस स्थल पर गौतम मुनि ने तपस्या किया था और सालिग्राम के रूप में भगवान की पूजा भी की थी और वही स्थल समीय बीतने पर वन के रूप में परिवर्तित हो गया। ऐसे एक दिन होटसला के राजा वीर मल्लला उस वन में शिकार करने गये और खो गए। एक पेड के नीचे विश्राम करते हुए उन्होंने एक दृश्य देखा।

एक शिकारी कुत्ता एक खरगोश के पीछे दौडते हुए आ रहा था। लेकिन वह खरगोश जब एक स्थान पर

पहुँचता है, तब वह घूम कर उस कुत्ते को ही शिकार करने उसके पीछे दौडने लगा। इस दृश्य को देखते ही राजा समझ गये की वहाँ कोई अमानुष्य शक्ति है और उस जगह पर खुदाई शुरू करने को आदेश दिया। तब वहाँ से प्रलय वराह स्वामी की मूर्ति मिली। राजा ने वहाँ पर ही स्वामी के लिए एक मंदिर का निर्माण किया। और स्वामी को वहाँ प्रतिष्ठित करवाकर नित्य पूजा करने की सुविधा भी देते हैं।

उसके बाद बहुत सारे प्रलय आए और वह मंदिर थोडी खण्डित और पुरानी हो गयी, लेकिन गर्भगृह में स्थित स्वामी की तेज और प्रकाश अभी भी अटूट है।

मंदिर की वास्तुकला शैली :

यह मंदिर लंबा चौकोर (Square Shaped) आकार में भस्म रंग के पत्थरों से निर्मित किया गया है। इस मंदिर के दो हिस्से हैं। पहला मुख मंडप और दूसरा गर्भगृह।

मूल भगवान श्री भूवराहनाथ स्वामी की विशेषतायें :

इस मंदिर के मूलमूर्ति ''प्रलय वराह स्वामी'' और ''आदिवराह महर्षि'' के नाम से जाने जाते हैं। भगवान का नक्षत्र रेवति है। गंडकी नदी में मिलती सालिग्रामों से बनायी गयी यह मूलमूर्ति 15 फीट लंबी है।

एक पैर नीचे भूमि पर और दूसरा पाँव मुडा हुआ सुखासन में भगवान विराजमान है। ऊपर के दो बाहुओं पर शंख और चक्र है। नीचे के दाये हाथ अभयमुद्र में है। और बायाँ हाथ अपने मुडे हुए पैर पर, जाँघा पर बैठी अपनी पत्नि भूदेवी को पकडते हुए दर्शन दे रहे हैं। एक हाथ में कमल और दूसरे हाथ से भगवान की कमर को पकडे हुए, भगवान की जाँघा पर बैठि हुई, 3.5 फीट लंबी भूदेवी दर्शन देती हैं।

भगवान के पीठ के पीछे सुदर्शन चक्र का रूप बना है। और मूलमूर्ति के नीचे वाले भाग पर हनुमान भगवान की मूर्ति भी बनी है।

मंदिर की विशेष पूजायें :

पौष मास के वराह जयन्ती के दिन, भगवान को 1008 कलशाभिषेक किया जाता है।

भूदेवी समेत वराहनाथ भगवान को फूल, हल्दी, दूध, दही, कुमकुम जैसे 25 दिव्य द्रव्यों से अभिषेक करना इस मंदिर में एक विशेष भाग है।

नित्य पूजा, विशेष अभिषेकों के अलावा यहाँ मृत्तिका पूजा, भू-सूक्त पारायण, रेवति अभिषेक सेवा जैसे विशेष सेवायें भी है।

तो सभी भक्त, इस ''कल्लहल्ली श्री भूवराहनाथ स्वामी'' मंदिर में आकर भगवान के दर्शन करें और उनकी असीम कृपा के पात्र बनें।

अक्तूबर 2024

02 गांधी जयंती, महालय अमावास्य
04-12 तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव
04-12 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का नवरात्रि उत्सव
08 तिरुमल श्री बालाजी का गरुडवाहन सेवा
09 सरस्वतीपूजा
11 दुर्गाष्टमी
12 विजयदशमी
31 नरक चतुर्दशी, दीपावली

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

श्री वेंकटराघवाचार्य अपनी अनुमानित अवधारणा को आगे बढते हुए कहते हैं - ''तिरुमंत्रशालै नाम यह सूचित करता है कि वह मंदिर या मूर्ति (जिसके सामने) यहाँ नया वैष्णव धर्म स्वीकृत या परिवर्तित व्यक्ति अष्टाक्षरी मंत्र या तिरुनाम जप में दीक्षित होता है। वह ऐसा स्थान भी है जहाँ नया दीक्षित व्यक्ति के लिए भोजन की व्यवस्था भी की गयी हो।'' (पृ.110) ''तिरुविलनकोयिल और तिरुमंत्रशालै का उल्लेख केवल आरंभिक काल में ही मिलता है, बाद में नहीं (पृ.111)।'' राजनैतिक परिस्थितियों में आये परिवर्तनों का प्रभाव अवश्य वेंगडम् पहाड पर मंदिर निर्माण पर पडा ही होगा। पल्लवों के समय में निर्मित मंदिर बाद के चोल राजाओं द्वारा कुछ नष्ट भी किया गया होगा। क्योंकि बाद में कुछ समय तक शैव धर्म ने अपना सिक्का जमाया अवश्य है। वेंगडम् से दस मील की दूरी पर स्थित तिरुच्चुगनूर के मंदिर ने शिव मंदिर से कुछ संघर्ष अवश्य मोल लिया होगा और उसे तितर-बितर करने का प्रयास भी। इसी संदर्भ में एक चाँदी की छोटी मूर्ति या प्रतिकृति(रेप्लिका) मूलमूर्ति (ध्रुवमूर्ति या पेरिय पेरुमाल) की बनी होगी। बाद में परंपरा के अनुसार उसकी प्रतिष्ठा भी हो गयी हो। यह कार्य एक महिला भक्तिन के हाथों संपन्न हुआ। वे ही सामवाय हैं। यह छोटी मूर्ति भक्तों की भावनाओं को पूरती रही होगी। इसीलिए इस मूर्ति को सर्व अलंकारों से विभूषित भी किया गया(पृ.81)।

''पल्लवों के पतन और चोल राजाओं के उत्थान से शैव धर्म पनपा था। वैष्णवों ने, जिनको तिरुवेंगडमुडैयन की आराधना मुख्य भी, स्थान को छोडकर उसके स्थान पर स्थानापन्न मूर्ति को तिरुच्चुगनूर तिरुविलनकोयिल से तिरुमल पर ले जाकर अर्चना की। चाहे कठिनाइयाँ क्यों न हो उन्होंने तिरुमल पर ही सांत्वना पायी। उनका लक्ष्य था कि किसी भी स्थिति में संघर्ष न हो। संघर्षों से दूर रहना उस समय उनका अभिमत था, विशेषकर तिरुच्चुगनूर के पराशरेश्वर मंदिर से संबंधित शैवमूर्तियों से। शायद यह भी एक प्रेरणा रही होगी सामवाय रानी के लिए। उन्होंने मणवालपेरुमाल (भोगश्रीनिवास) की मूर्ति की प्रतिष्ठा तिरुवेंगडम् मंदिर में की। इसका एक और कारण भी संभवतः हो सकता है। तिरुविलन कोयिल पेरुमाल, तिरुमंत्रशालै - पेरुमाल और यहाँ तक कि तिरुवेंगडत्तुपेरुमानडिगल सब तिरुमल पेरुमाल(श्री वेंकटेश्वर)

की प्रतिकृतियाँ ही हो, लेकिन वैखानस आगम परंपरा के अनुसार बने न हो। लेकिन उसकी बहिन सदृश परंपरा पाँचरात्र परंपरा के अनुसार बनी और प्रतिष्ठित हों।

इसलिए भय था कि तिरुमल और तिरुच्चुगनूर के मंदिरों के बीच आगे चलकर कभी वैमनस्य उभरें। इसीलिए निर्णय हुआ होगा कि श्री वेंकटेश्वर के सभी कार्यों का निर्वाह केन्द्र तिरुमल ही रहे। एक समस्या अवश्य थी जो ध्रुवमूर्ति के नित्य अभिषेकम् को लेकर थी। ध्रुवमूर्ति विशाल है। इसीलिए चाँदी की प्रतिकृति बनी। भोगश्रीनिवास के रूप में तिरुमल पर विलसित हुए। संभावित कठिनाइयों को पार भी किया गया।'' (पृ.355-356) ''तीर्थयात्रियों को यात्रा संबन्धी कठिनाइयाँ अधिक हो गयीं। तीर्थयात्री तिरुच्चुगनूर से दस मील की दूरी तय करने के बाद वहाँ आस-पास स्थित देवताओं की पूजाओं से ही संतुष्ट हो जाते थे। पर्वत पर चढते ही नहीं थे। चाँदी की मूर्ति की प्रतिष्ठा के बाद भक्त यात्रियों के लिए पर्वत पर चढना अनिवार्य ही हो गया (पृ. 357)।'' ''पहली बार हम चमक उठते हैं, जब हमें यह समाचार मिलता कि वेंगडम् पर्वत पर सन् 935 में भी अखण्ड ज्योति जलती ही रही। (समाचार मिलता है शिलालेख सं 8 और 9 से, खण्ड I) तिरुच्चुगनूर के सभैयार ने इस सबका कर्तव्य निभाया है'' (पृ.116)।

उक्त दोनों विद्वानों की दृष्टियाँ और अनुमानों से लगायी गयीं बाते तथ्यों पर खरी नहीं उतरती हैं। ये दूरान्वय से जुडे अनुमान हैं। श्री राघवाचार्य जी ने यह निर्द्वंद्व रूप से स्पष्ट नहीं किया है कि चार प्रतिकृतियों में से दो ही श्री वेंकटेश्वर के 'पंचबेरम' के अंतर्गत कैसे स्वीकृत हैं। वे ही श्री वेंकटेश्वर के मंदिर में प्रवेश कैसे कर गयीं, स्थापित हो गयीं। उन्होंने सामवाय द्वारा प्रस्तुत मणवालपेरुमाल को, भोगश्रीनिवास को, तो स्वीकार किया, लेकिन एक और मूर्ति को जो दोनों देवेरियों के साथ हैं, जो पहाड की एक घाटी में मिली थी, केवल उत्सवविग्रह मूर्ति मानी है। इतना ही नहीं तिरुचानूर में प्रतिष्ठित अन्य मूर्तियों की स्थिति के संदर्भ में एक प्रकार का मौन है। उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि वैष्णवों के कार्य-कलाप तिरुचानूर से तिरुमल पहुँचने के बाद बाकी प्रतिकृति मूर्तियों के बारे में क्यों कुछ भी पता नहीं है। इसके अलावा उनकी एक घोषणा है - 'प्रथम दो स्थानीय देवता मूर्तियाँ हैं और अंतिम तिरुवेंगडम् देव से संबन्धित है।' (पृ.110) यह उनके द्वारा दिये गये अन्य कथनों से मेल नहीं खाता। कथन है (पृ.355) - ''तिरुविलनकोयिल - पेरुमाल, तिरुमंत्रशालै पेरुमाल और यहाँ तक कि तिरुवेंगडत्तुपेरुमानडिगल जो तिरुच्चुगनूर में थे सब पहाड पर स्थित देव की प्रतिकृतियाँ ही हैं।''

यहाँ एक और सत्य है। उस समय आज की तरह यातायात की सुविधाएँ नहीं थीं। यात्रा के लिए बैलगाडी का उपयोग करना था। उसके लिए अपनी सामर्थ्य और शक्ति का अंदाजा भी लगाना है। क्योंकि उस समय मार्ग कठिन और घने जंगल का मार्ग था। प्राणों के लिए खतरा भी था। इन सबके बीच भक्त को, यात्री को, निर्णय लेना है। ऐसे यात्री भक्त प्रतिकृति मूर्ति के दर्शन मात्र से तृप्त नहीं हो सकते। तिरुचानूर में तो केवल प्रतिकृति मूर्तियों की बात ही है। समय, धन और कठिनाइयों को झेलना आदि के बाद भक्त सिर्फ प्रतिकृति मूर्ति दर्शन से संतुष्ट कैसे हो सकता है? वह तो पर्वत शिखर पर पहुँचकर मूलमूर्ति, ध्रुवमूर्ति के दर्शन के लिए अवश्य लालाइत होगा। इसी से भक्त को तुष्टि और संतुष्टि मिलती है न। श्री वेंकटेश्वर तो

भक्तों के हृदयेश्वर ही हैं। भोगश्रीनिवास के दर्शन मात्र से वह आनंद भक्त को नहीं मिलेगा। इस की भूमिका में दो या तीन प्रतिकृतियाँ, अगर तिरुचानूर में रहीं भी हो, भक्तों के मन की तृप्ति उनके दर्शन मात्र से हुई होगी, यह समझना ठीक नहीं लगता। क्योंकि वे प्रतिकृतियाँ मात्र हैं, मूलविराट मूर्ति नहीं हैं। यात्रा मार्ग में अगर प्रतिकृतियाँ हो तो उनका दर्शन भी भक्त अवश्य करता है।

कुछ प्राचीन शिलालेख तिरुचानूर में अवश्य तैयार किये गये होंगे। तिरुचानूर का राजनैतिक कार्यक्रमों का केन्द्र होना इसका प्रधान कारण है। स्थानीय सभा या समिति द्वारा उस समय सभी कार्यकलापों का निर्वाह होता रहा होगा। प्रधानतः तिरुमल वेंकटेश्वर मंदिर के कार्य यहाँ से निर्वहित होते होंगे। कोष और भण्डार यहाँ अवश्य रहे होंगे। यहाँ से नैवेद्य के लिए आवश्यक सामग्री, घी आदि समय-समय पर अधिकारियों के पर्यवेक्षण में रहे होंगे। शायद प्रांतीय क्षेत्र पालक ने यहाँ निर्मित सभा भवन में (तिरुचानूर में) आवश्यक सभा का निर्वाह किया होगा। यहाँ देवदान लिया जाता होगा। इसके संकेत मिलते हैं - ('देवार देवदानम् तिरुच्चुगनूर नाम विट्टविट्टिल मुंबु' खण्ड I, सं. 19 और 34)। सब लेखा-जोखा यहीं से होते भी होंगे। राजा स्वयं भी यहाँ दरबार चलाते होंगे। तिप्पलाडीश्वर मंदिर में एक दरबारी समावेश मंदिर है। यह मंदिर तिरुचानूर में है। (खण्ड I, सं. 36)। श्री वीरराघवाचार्य ने स्वीकार किया है कि ''तिरुच्चुगनूर के सभायार का कर्तव्य था उसके (श्री वेंकटेश्वर मंदिर के) व्यवहारों को देखना।'' (पृ.116)।

डॉ.रामाराव कहते हैं - ''तिरुचानूर में तिरुविलनकोयिल के स्थान का पता लगाना अब संभव नहीं है। अधिकतर शिलालेख, जिनका उल्लेख पहले किया गया है, पद्मावती मंदिर के पडिकावलि गोपुर और वाहनमंटप में पाये गये हैं। अब केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है कि तिरुविलनकोयिल आज पद्मावती के मंदिर में स्थित तीन मंदिरों में एक हो। शायद उसे उपेक्षा और अनादर की भावना से देखने के कारण शिथिल हो गया हो। उस शिथिल मंदिर की सामग्री को आज स्थित तीन मंदिरों के निर्माण के लिए उपयोग में लाया गया होगा। ये मंदिर आज आलय प्रांगण में हैं।'' (पृ.70)।

शक संवत्सर 820 के एक टूटे शिलालेख में (खण्ड I, सं. 7) दर्ज है कि गाँव से प्राप्त आमदनी को ''तिरुवि...'' के लिए खर्च किया गया हो। इसमें मिला शब्दांश ''तिरुवि...'' 'तिरुविलनकोयिल' ही हो सकता है। यही हो तो शक संवत 820 (सन् 898) में तिरुविलनकोयिल यहाँ रहा होगा। लेकिन उसमें किसी देवता की मूर्ति की प्रतिष्ठा की बात उल्लिखित नहीं है अथवा आगे के शिलालेख या अन्य सूत्रों में भी, 13वीं शती तक मिले सूत्रों में, कोई

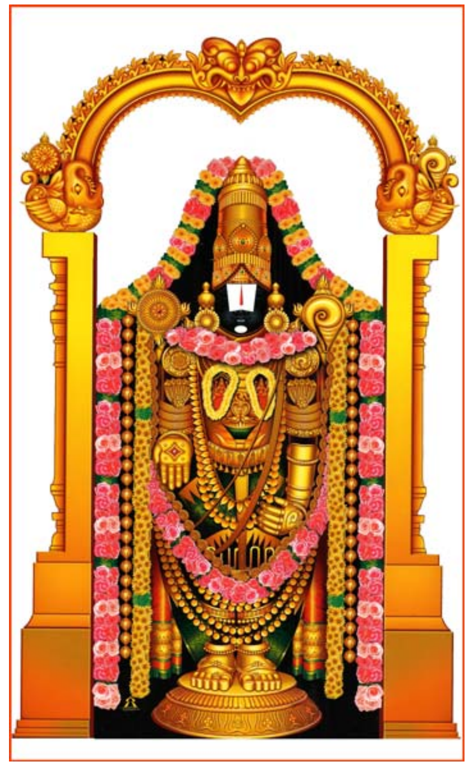

संकेत इस संबन्ध में नहीं मिलते (खण्ड I, सं. 40)। राजराज चोल III के समय में, उनके 19वें शासन वर्ष में, सन् 1235 में, अलगियपेरुमाल (सुंदर देव, सुंदरराजस्वामी) के मंदिर का उल्लेख मिलता है - सं. 34 में तारीख 5, या 15 या 25 (वर्ष 1221, 1231 या 1241 ई.) शासन वर्ष में भूमि अनुदान राजराज III द्वारा होने की बात है। यह पुरानी भूमि दान की सूचना है। खण्ड I के 97, 118, 119, 120, 137 और 144 शिलालेख सूचनाएँ भी मिलती हैं। उनमें तिरुविलनकोयिल, तिरुविलनकोयिल पेरुमानडिगल, अलगिय और पंगुनि के उल्लेख हैं जिनसे तिरुचानूर में अलगियपेरुमाल की मूर्ति होने की सूचना मिलती है। उनको प्रसाद और उत्सव के लिए कुछ कर समर्पित हुए हैं। यह उत्सव पंगुनी मास में होता था।

क्रमशः

विघ्नों को दूर करने वाले हैं विघ्नेश्वर। संकटों का निवारण करते हैं; इसलिए वे हेरंब हैं। सर्वलोक रक्षक हैं; अतः लंबोदर हैं। पूर्ण ज्ञान प्रदान करके, रक्षा करते हैं; अतएव शूर्पकर्ण हैं। ऐसी, अनेकों विशेषताओं का निलय गणनाथ हैं। विविध रूपों में, विविध नामों से पूजे जाने वाले ''गणेश'' की अधिक जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता हमें है न। देवताओं में प्रथम, ज्येष्ठ गणपति की पूजा करने के पश्चात् ही इष्टदैवों की प्रार्थना करने का आचार प्राचीन काल से अमल में है। प्राचीन-दैव के रूप में विघ्नेश्वर को मानकर उनको गणाधिपत्य दिया जाना इसका प्रमुख कारण है। गणपति ज्येष्ठराज हैं; सर्व देवताओं से पहले पूजे जाने वाले हैं; ऐसा ऋग्वेद ने बताया। तैंतीस करोड देवताओं ने सारी सृष्टि को विविध गणों में विभाजित किया। उन गणों के अधिपति ''गणपति'' हैं; ऐसा वेदों ने निर्देशित किया। उसी प्रकार वेदांगों में से एक छंदः शास्त्र में वर्णित मगण, भगण, जगण, नगण, सगण, रगण, तगण, यगण नामक अष्ट-गणों के अधिष्ठान-देव ''गणपति'' हैं। गणपति द्वादशादित्यों, एकादश रुद्रों, अष्टवसुओं के भी प्रभु हैं। ''ओं'' कार सभी छंदों में से प्रथम है; ऐसा ''प्रणवश्चंदसामिव'' कहकर कालिदास ने बताया। प्रणवनादस्वरूप, विनायक हैं; अतः ''गणपति'' के रूप में विलसित हो रहे हैं। ''योग'' के अधिपति ''गणनाथ'' ही हैं; ऐसा याज्ञवल्क्यस्मृति ने बताया।

गणेशायनमः

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

❊❊❊❊❊

गणेश चतुर्थी के संदर्भ में...

सर्वशुभप्रदाता

गणपति सर्व विद्या देवता हैं; प्रणवस्वरूप, शब्द-ब्रह्म, आनंदस्वरूप के रूप में विराजित हो रहे हैं।

ज्ञानार्थवाचको गश्च, णश्च निर्वाण वाचकः!
तयोरीशं परब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम्!!

''ग'' अक्षर ज्ञानार्थवाचक, ''ण'' अक्षर निर्वाण वाचक है। ''गण'' शब्द का अर्थ ''वाक्'' है। इसके द्वारा ज्ञात होता है कि ''वागाधिपति - गणपति हैं।'' शास्त्र भी यही कहता है। ''श्रीगणेश'' नामक संस्कृत शब्द का अर्थ है प्रारंभ। इसीलिए, विनायक, आदिदेव बने। ''गण्यंते बुध्यंते ते गणाः'' के अनुसार समस्त दृश्यमान पदार्थ, सारे गणों के अधिष्ठान देव गणपति हैं। जिनके नेता कोई नहीं है, व सर्वस्वतंत्र देव विनायक हैं। समस्त विघ्नों को दूर करके शुभफल पहुँचाने वाले विनायक हैं। गणनाथ, ओंकार स्वरूप हैं; ऐसा ''गणपत्यध्वरशीर्ष'' ने वर्णन किया। वे स्वयंभू हैं। मूलविराट से उद्भूत होने के पश्चात् उनमें से ही तैंतीस करोड़ देवताओं का आविर्भाव हुआ।

देवता गणों का उद्भव होकर, सृष्टि के प्रारंभ होने के समय से आदिपुरुष के रूप में गणपति पूजाएँ स्वीकार कर रहे हैं; ऐसा गणेश पुराण बताता है। ''शुक्लांबरधरं विष्णु'' श्लोक सूचित करता है कि गणेश, विष्णु-स्वरूप हैं। सर्वसिद्धिप्रद, सर्वमंत्र देवतारूपी विघ्नहर प्रणव स्वरूप गणपति के अनेक रूप हैं। गणपति सारे युगों में विविध रूपों में आविर्भूत होते हैं। कृतयुग में सिंह वाहन पर आरूढ़ हो दशशिरों से दर्शन दिये। त्रेतायुग में मयूरवाहन पर, मयूरेश के रूप में आविर्भूत हुए। द्वापरयुग में अरुण-कांति से शोभित हो चतुर्भुजों से विलसित हुए। कलियुग में तुंडधरकर 'एकदंत' हो, संपत्ति सूचक तोंद से विराजित होनेवाले गजानन की आराधना हम कर रहे हैं।

विनायक का परिवार

गणपति का दिव्य आविर्भाव, एक अनोखा संगठन है। उबटन से विनायक का निर्माण करके द्वार पर, द्वार-पालक नियुक्त करके खड़ा कर दिया माँ पार्वती ने। आगे-पीछे न सोचकर अपने को रोकने से क्रुद्ध होकर शिव ने उसका सिर काट दिया, पश्चात् पार्वती की

चिंता देख कर अपने गणों को भेजकर हाथी का सिर मंगाकर उस बालक को जोड़कर प्राण फूंक दिये। सुंदरतर शुभवदन और अरुण कांति से विराजित, कोटिसूर्य प्रभा संपन्न दिव्याकृति से विलसित बालक ने ब्रह्म, विष्णु, रुद्रादों को प्रणाम करके ''क्षंतव्यश्चापराधोमे मानश्चै वेदृशो नृणाम्''; (अभिमानी हो मैंने जो अपराध किया उसे क्षमा करो) कहकर त्रिमूर्तियों से प्रार्थना की। पार्वती देवी ने उस बालक को गोद में लेकर, हे गजवदन! तुम शुभकर हो; शुभप्रदाता हो; आज से सारे देवताओं में से प्रथमार्चन तुम को ही प्राप्त होगी; ऐसा आशीष, प्रदान किया। तब से लेकर गणनाथ को प्रथम पूजनीय मानकर आराधना करना प्रारंभ हुआ। ज्ञान-विकास से मुक्ति और गणेश के आविर्भाव को तात्विक-समन्वय संबंध है; ऐसा शिव पुराण ने अनोखे ढंग से विवरण दिया। ''एकमेवा द्वितीयं ब्रह्म'' के अनुसार ब्रह्मं, अद्वयस्वरूप शांति है; द्वैतरूप भ्राँति नहीं है; ऐसा बताना ही गिरिजानंद गणेश

के एकदंत बनने का अंतरार्थ है। प्रजापति ने अपनी पुत्रियाँ; सिद्धि और बुद्धि को प्रदान करके विवाह रचाया। सिद्धि, बुद्धि-गणपतियों की संतान क्षेम और लाभ हैं। कार्य-साधना में सिध्दि, बुद्धि का साथ देती है तो लाभ और क्षेम प्राप्त होते हैं; ऐसी संदेशात्मक-भावना विनायक के परिवार में निहित है।

आराधना-फल

विनायक की पूजा करने से श्री लक्ष्मी का कटाक्ष, प्राप्त होता है; ऐसा याज्ञवल्क्यस्मृति बताती है। गणपति की आराधना, सभी शुभ पहुँचाती है। कहते हैं कि त्रिपुरासुर का संहार करने निकलते वक्त परमशिव ने गणपति का ध्यान व पूजा करके विजय पायी। नारद के प्रबोध के अनुसार रानी इंदुमति ने मिट्टी की प्रतिमा तैयार करके गणेश चतुर्थी के दिन पूजा संपन्न की और नागलोक में बंदी बनाये गये अपने पति को प्राप्त की। कार्तवीर्य का पुत्र सहस्रार्जुन, वक्रांगों से जन्म लेने पर भी गणेश की आराधना करके सर्वांगों से शोभित हो विराजित हुए। रुक्मांगद चिंतामणि क्षेत्र में गणेश की आराधना करके कोढ़ की बीमारी से मुक्त हुआ। रुक्मिणीदेवी ने गणनाथ के आशीर्वाद से पुत्र, प्रद्युम्न को जन्म दिया। विनायक चतुर्थी के दिन गणपति की आराधना करने वाले सभी रोगों से मुक्त हो आरोग्यप्रद जीवन बिताते हैं। सद्बुद्धि, मेधा शक्ति, विद्याजय, सुमैत्री, कार्य-साधना इत्यादि शीघ्र ही प्रदान करने वाले गणनाथ हैं। सबकुछ उनकेलिए समर्पित है; ऐसी भावना से गणेश चतुर्थी मनानी चाहिए।

स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- पानी और बिजली को वृथा न करें।
- अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

(गतांक से)

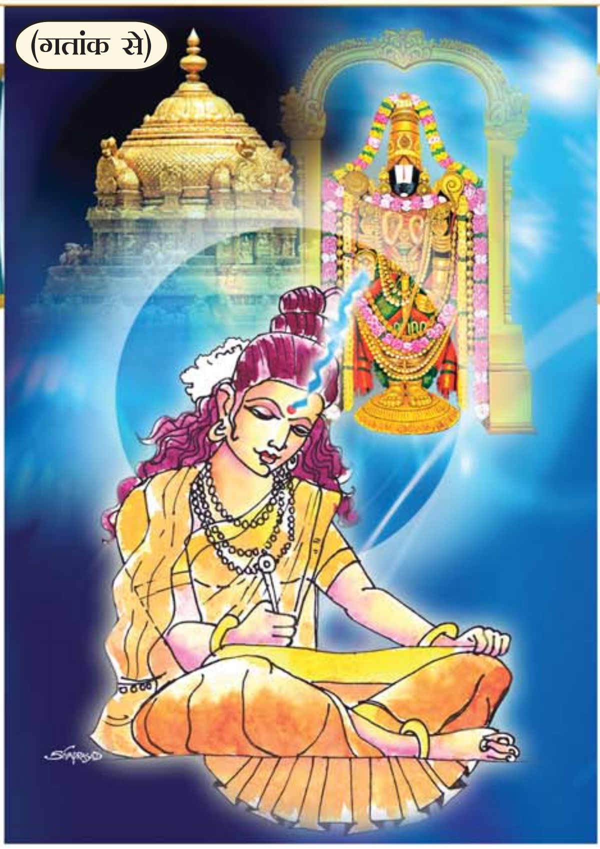

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तृतीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

मुनियों से स्वामी का संवाद करना :

''हे मुनिगण! मेरे दर्शन करने के लिए आनंद के साथ आप के यहाँ आना मुझे लग रहा है कि मेरे प्रति आप अत्यंत भक्ति परिपूर्ण हैं। मैं आप के लिए उचित कौन से वरदान दे सकता हूँ? आप इतने दूर से आये हैं।'' श्री वेंकटेश्वर की बातों को सुनकर मुनिवरों को अत्यंत हर्ष हुआ। भक्ति से वेंकटनाथ को बार बार नमन करते हुए उन्होंने इस रूप में विनति की।

''हे परब्रह्म स्वरूपा! सारे विकारों से परे आप वैकुंठ से पधार कर यहाँ वेंकटगिरि पर बसे आप को मनुष्य आत्मा में आप के दर्शन कर रहे हैं, आप के दिव्य मंगल विग्रह को अब हमने श्री वेंकटाद्री पर अपने चर्म-चक्षुओं से दर्शन किए। हमारे लिए यही बहुत कुछ है और वरदानों की आवश्यकता किस लिए है? अब करुणा से हमें मोक्ष मार्ग दिखाना ही चाहिए और वरदानों की आवश्यकता नहीं है।'' कहने पर नारायण ने मंदस्मित वदन से मुनियों से इस रूप में कहा। ''हे मुनिगण! परिपूर्ण कामी महामुख्य जगत में पावन लोग है। इसलिए आप वरदान नहीं मांगते हुए अपने निष्काम को प्रकट कर रहे हैं। इसी निष्काम भाव के कारण ही आप को अमित संतोष प्राप्त हुआ है। परम शांति को प्राप्त करनेवाले आप को काम्यार्थों से कोई काम नहीं है। आत्मानुभव ही आप की संपदा है। आप के मन को जानने के लिए ही मैंने अच्छे वरदानों के बारे में पूछा है। आप में निष्काम तत्व को मैंने देखा है। आप को प्रीति से मैं आगे उत्तम पद प्रदान करूँगा। बडे बडे वरदान मैं मनुष्यों को देते हुए धरती पर विपुल अनुपम ढंग से ब्रह्मोत्सव करने से यहीं रहते हुए मैं उन्हें स्वीकार करूँगा। पहले कन्या मास में ब्रह्म ने महोत्सव किया है इसलिए उन के संकल्प के अनुसार ही उन्हें और वृद्धि करने के उद्धेश्य से धरती पर के जनों को पहाड बुला लाकर उन की मनौतियों की पूर्ति करते, अखिल भोग मैं यहाँ प्राप्त करूँगा। ऐसी मेरी लीलाओं को सदा स्मरण करते हुए भक्तजन भजन करते रहते हैं। दूर रहनेवालों को तथा समीप रहनेवालों को उनके अभिष्टार्थ को देकर मैं उन की रक्षा करता रहूँगा। हे पुण्यजन! मैं उन को देहांत के बाद पुण्यगतियाँ भी

प्रदान करूँगा।'' हरि के इन बातों को सुन कर अत्यंत आनंदित होकर शेषाद्री पर रहते मुनिगण ने हरि की विनति की है।

तदूपरांत मुनियों को वेंकटगिरि नायक ने देखकर करूणा से 'आप को यहाँ पर क्यों रहना है? हे मुनीश्वर! अब आप अपने आश्रम पर चलिए।' श्री वेंकटेश्वर की इस आज्ञा को पाकर मुनिगण ने श्री वेंकटेश्वर, श्रीदेवी, भूदेवी और नीलादेवी को नमस्कार करते हुए वहाँ से निकल जाने की अनिच्छा से फिर नेत्र पर्व के रूप में हरि की ओर देखकर नेत्रों से आनंद भाष्पों के निकलते निगमांत सूक्तियों से हरि की स्तुति करते... करते... तृप्त न होकर बार-बार स्वामी के सुंदर रूप को चित्त में स्थिर करके, तन्मयत्व को प्राप्त करके, सारे मुनिगण उस अनंत और विश्वमोहन को छोड कर जाने में असमर्थ हुए। उन की इस दशा को देखकर पद्मोदर ने इस रूप में कहा।

''हे परम मुनिगण! निर्गुण ब्रह्म कहलानेवाले मैं सगुण विलासों को मनुष्यों को दिखाकर रक्षा करने के उद्धेश्य से ही इस स्थल पर विराजमान हूँ। वैसे मैं सर्वत्र व्याप्त हूँ। इसलिए पूर्ण विवेकवान को कभी मुझे छोड कर रहने का वियोग नहीं होता है। अपने विमल स्वरूप को सदा उन को दिखाते रहूँगा। इसलिए सद्भावना से वह मुझे पकडे बिना सर्वत्र देखता रहेगा। आप भी उस विधान को ग्रहण करके अपने स्थलों पर चलिए। मैं यहीं पर रहूँगा।'' इस रूप में मुनियों को पुण्यात्म स्वरूपवाले नैमिशारण्य भूमि में लौट जाने का उपदेश देकर श्रीनिवास ने मौन मुद्रा धारण की। फिर अद्भुत ढंग से अर्चामूर्ति के रूप में विराजित हुए।

तब शिलाविग्रह के रूप में अर्चामूर्ति बने श्री वेंकटेश्वर को देखकर आश्चर्यचकित होकर पूर्ण भाव से मुनियों ने इस रूप में प्रशंसा की है।

मुनीश्वरों के द्वारा वेंकटेश्वर की स्तुति करना :

पंच चामर श्लोक :

सरोज पत्र लोचन, सुसाधु खेद मोचन, चरचरात्मक प्रपंच साक्षी भूत अव्यय, मुरारी, पद्मजामरेंद्र, पुजितांघ्रि, पंकज, सागरात्मेश्वर, हे वेंकटेश्वर! आप का सदा स्मरण करते रहेंगे। हे पुराण पुरुष! समस्त पुण्य कर्मों की रक्षा करनेवाला! मुरासुर आदि दानवों संहार करनेवाला! धरती का उद्धारक! प्रशांत तापसात्मा! सागरात्मेश्वर! हे वेंकटेश्वर! आप का सदा स्मरण करते रहेंगे। शरासन आदि शस्त्रबृंद साधन, शुभाकर, खराख्य राक्षसेंद्र के गर्व को चकनाचूर करनेवाले हे पावक! हे नराधिनाथ! आप की वंदना करते हैं! नगात्मजात्मा! सागरात्मेश्वर! हे वेंकटेश्वर! आप का सदा स्मरण करते रहेंगे। मुरारी शौर्य विग्रह! सुपर्वराट का परिग्रहण करनेवाले!

परात्पर! मुनींद्र चंद्र! भावगम्य विग्रह! धरामराघ शोषण करनेवाले! सुधा तरंग भूषण! नगात्मजात्मा! सागरात्मेश्वर! हे वेंकटेश्वर! आप का सदा स्मरण करते रहेंगे।

इस प्रकार मुनिगण श्री वेंकटेश्वर की स्तुति करके बार-बार प्रणाम करते हुए, वेंकटाद्री से उतर कर कपिलतीर्थ मार्ग से गिरि की परिक्रमा करके नैमिशारण्य पहुँच गए। वहाँ सूत को देखकर मुनियों ने कहा।

मुनियों का नैमिशारण्य लौटकर सूत की स्तुति करना :

''हे सूत! आप की दया से प्रसिद्ध वेंकटाद्री जा सके। वहाँ प्रीति से आप के बताने के अनुसार उस गिरि को पाया। अहो! आप के द्वारा प्राप्त ज्ञान से हमारा उत्साह बढा है। आप का माहात्म्य अत्यधिक है। आप सामान्य नहीं है! हे सूत! हम से आप ने जो कुछ उस हिरण्य गिरीश के बारे में बढा चढाकर चित्र विचित्र ढंग से बताया। आप को ये सब कैसे मालूम है! सचमुच यह गिरि अद्भुत है। धर्माद्री के रूप में यह गिरि प्रसिद्ध है। चैत्र रथ के रूप में वह दिखाई पड रही है। खग, मृग आदि अपने जाति-विरोध को भूल कर उस वन में जी रहे हैं। स्वामिपुष्करिणी संपूर्ण है। उस के पश्चिम भाग में भू वराह स्वामी दीपित बसे हैं। उस के दक्षिण भाग में सुवर्ण से तप्त कुंभ के रूप में गोपुर हैं। मणियों से शोभित प्राकार मंटप हैं। उन सब के बीच में दिव्य कांति वाले विमान को देखा है। हे सूत! हम ने उस दिव्य विमान के मध्य में लक्ष्मी नाथ के दर्शन किए। उस के समीप खडे होकर प्रणाम करते समय आश्चर्य से पुलकित होकर सुध-बुध को खोकर लज्जा किए बिना स्वामी को देखते हुए अति उत्साह से हे सूत! नाच-गान किया। नाच-गान करके अपने को हरि को समर्पित किया। बदले में निष्कपट से हम से श्री वेंकटाचलपति ने बात की। उन की मधुरोक्तियाँ सुन कर हमें बहुत आनंद हुआ। फिर मित्रतावश हमें नैमिशारण्य लौटने के लिए माधव ने आज्ञा दी है। बाद में वे अर्चाकृति में बदल गए। उन के मौन मुद्रा धारण करने के बाद उन के माहात्म्य को वहाँ देखकर उस पर्वत से उतर कर हम यहाँ पर चले आये। हे सद्गुण व्राता! हे सूत! आपने जिस रूप में बताया था उस रूप में उस पर्वत पर हमने चिह्नों को देखा है। आपने जिस भाव में बताया वे उसी भाव में है। हमें आश्चर्य है उन्हें देखकर ही आप ने बताया। या आप के भाव के अनुसार वे बदले हैं?'' इस रूप में तापसोत्तमों ने अति प्रीति से पूछने पर सूत ने इस रूप में कहा।

''हे मुनिगण! हमारे व्यास मुनि की कृपा से मेरे मन में सारे भाव और दृश्य दिखाई देते हैं। इस में मेरा कोई बडप्पन नहीं है। बादरायण के प्रभाव से ही यह सब कुछ संभव हो पाया। इसलिए मुझे महान मत बनाइए। आप धन्यात्मा

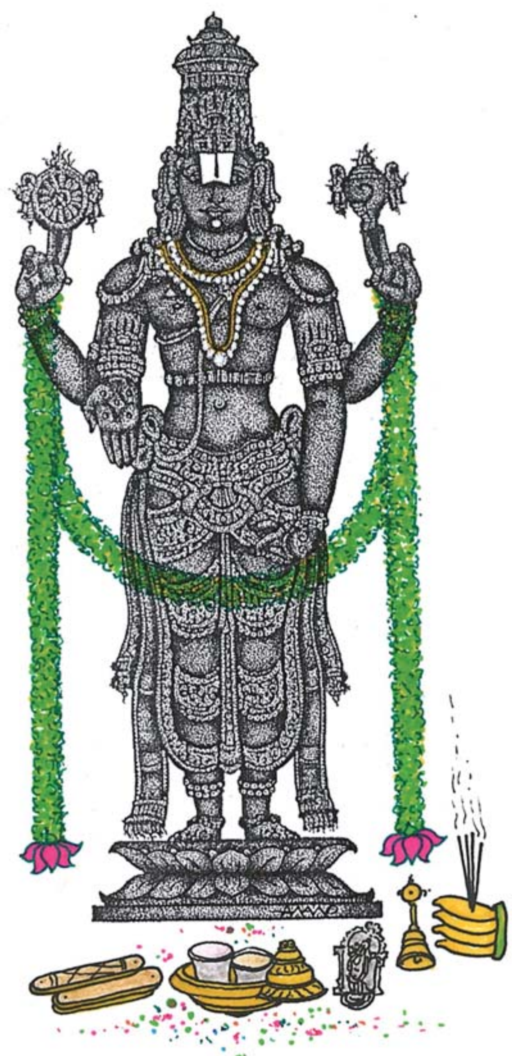

हैं। करुणा से मुझ से पूछने पर मैंने अपने चित्त के अनुसार ही आप को बताया है।

यह नहीं है कि मैंने वेंकटाद्री में देखकर ही आप को बताया है। ऐसा मन में मत सोचिए। तार, शीकर, सैकत, वितानों के बारे में हिसाब करके बता सकते हैं। किंतु वेंकटगिरींद्र नायक की लीलाओं को निश्चित रूप से गिनना शेष को भी संभव नहीं है। श्रीकर वेंकटनाथ के प्रकटित कुछ चरितों को जैसे मुझे मालूम हैं, उसी रीति में आप को बताया। हे संयमी प्रभु!''

सूत के द्वारा किया गया मंगलाशासन :

''इस कथा को लिखनेवाले, पढनेवाले, विश्वास रखते हुए सुननेवाले आयुरारोग्यों को प्राप्त करते हैं। भूतल में वे पुण्यात्मा बनते हैं।

कमलाप्त, चंद्र, नक्षत्र जब तक होंगे तब तक यह कृति शुभकर होगी। तरिगोंडा-हरि नरसिंह पति की कृपा से भूलोक में यह कृति सदा वृद्धि करती रहेगी।

हे मुनिगण! भू वराह प्रभु को, सत्पुण्य निधि को, लक्ष्मी को और भू-नीलादेवी को, हरि को, शेषगिरि को, तरिगोंडा, श्री लक्ष्मीनृसिंहस्वामी को मंगल हो।'' कहते मोद से सूत ने सद्भक्ति के साथ वेंकटाद्री माहात्म्य को मन भरने तक सुनने की इच्छा रखनेवाले शौनकादि मुनिगण को बताया।

आश्वासांत :

श्री विभ्राजिता चरित! महा विभवोन्नता! जगत्रया प्रख्याता! श्री वेंकटगिरि नायक! पावन तरिगोंडा, श्री लक्ष्मी नृसिंहस्वामी! पाप विदारी! सरसिदल नेत्रा! सन्मुनि स्त्रोत्रा पात्रा! सुरवरवन चैत्रा! शोकवल्ली लवित्रा! सुरुचिर घन गात्रा! सूरि चित्ताब्ज मित्रा! दरहसित सुवक्त्रा! धारुणी कलत्रा!

यह तरिगोंडा, श्री लक्ष्मी नृसिंह भगवान का करुणा कटाक्ष कलित काव्य विचित्र वशिष्ट गोत्र पवित्र कृष्णयामात्य की पुत्री वेंगमांबा प्रणीत श्री वेंकटाचल माहात्म्य नामक वराह पुराण में प्रस्तावित श्री चक्रराज की दिग्विजय यात्रा, श्रीवैष्णव धर्म की प्रशंसा, विहित सत्कर्म प्रकार से यम, नियमादि योगाभ्यास क्रम, श्री वेंकटेश्वर अष्टोत्तर शतनामों का प्रभाव, नैमिशारण्यवासी महामुनियों का वेंकटाद्री पधारना, श्री वेंकटेश्वर उन मुनियों को दर्शन देकर उन से बात करना, वे मुनि श्री वेंकटेश्वर के दर्शन करके, उन की आज्ञा के अनुसार फिर वापस नैमिशारण्य पहुँचना, वहाँ सूत को देखकर विनति करना, मुनियों के साथ मिल कर सूत के द्वारा श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मंगलाशासन करना आदि कथांशों का यह तृतीय आश्वास है।

तृतीय आश्वास समाप्त।

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

वामन अवतार विष्णु के पाँचवाँ तथा त्रेतायुग के पहला अवतार था। इस के साथ ही यह विष्णु के पहले अवतार थे जो मानवरूप में प्रगट हुए। ये बालक रूपी ब्राह्मण अवतार था। इन को दक्षिण भारत में उपेन्द्र के नाम से भी ही जाना जाता है। भाद्रपद शुक्ल द्वादशी वामन जयंती के नाम से प्रचलित है वामन द्वादशी भी कहा जाता है। वामन अवतार श्रीहरि विष्णु भगवान का पाँचवाँ अवतार है। भारतीय अवतारवाद में श्रीहरि विष्णु भगवान ने अभय वचन दिया है। ''धरातल पर जब जब असुरों का साम्राज्य बढता है, सब लोग भय से पीडित हो तब अधर्म का नाश करने के लिए और धर्म की स्थापना करने हेतु हर युग में अवतार लेता हूँ'', अतः इसलिए श्रीहरि ने वामन अवतार लिया। आज हम यहाँ श्रीहरि विष्णु भगवान का पाँचवाँ अवतार श्री वामनजी का वृत्तांत का अनुसंधान करवाने जा रहे है।

वामन अवतार का प्रयोजन (भगवान ने दिया वचन - माता अदिति को) :

पौराणिक कथा के अनुसार पूर्वकाल में असुरराजा बली ने जब महायज्ञ किया तब दैत्य और असुर का संहार करनेवाले श्री वामन भगवान का चरित्र बहुत ही सुंदर है। वामन भगवान कौन था? प्रह्लाद के पुत्र विरोचन, विरोचन के पुत्र बली महाराज - जो की असुरराजा थे। महापराक्रमी और अति बलवान थे, राजा बली ने अति बल से समस्त देवतागण पर विजय प्राप्त किया, और स्वर्गाधिपति इन्द्र को हराकर स्वर्गराज बन गया। विशेष में राजा बली ने त्रिलोक पर कब्जा किया। इस वक्त देवता का तेज नष्ट हो गया। इन्द्र शक्तिहीन बन गया। ऐसी परिस्थिति में देवमाता अदिति अत्यंत दुःखी हुई। अदिति माता ने बडी तपस्या की। अदिति ने भगवान की स्तुति की। अंत में श्रीहरि विष्णु प्रसन्न हुए और माता अदिति को वचन दिया की मैं

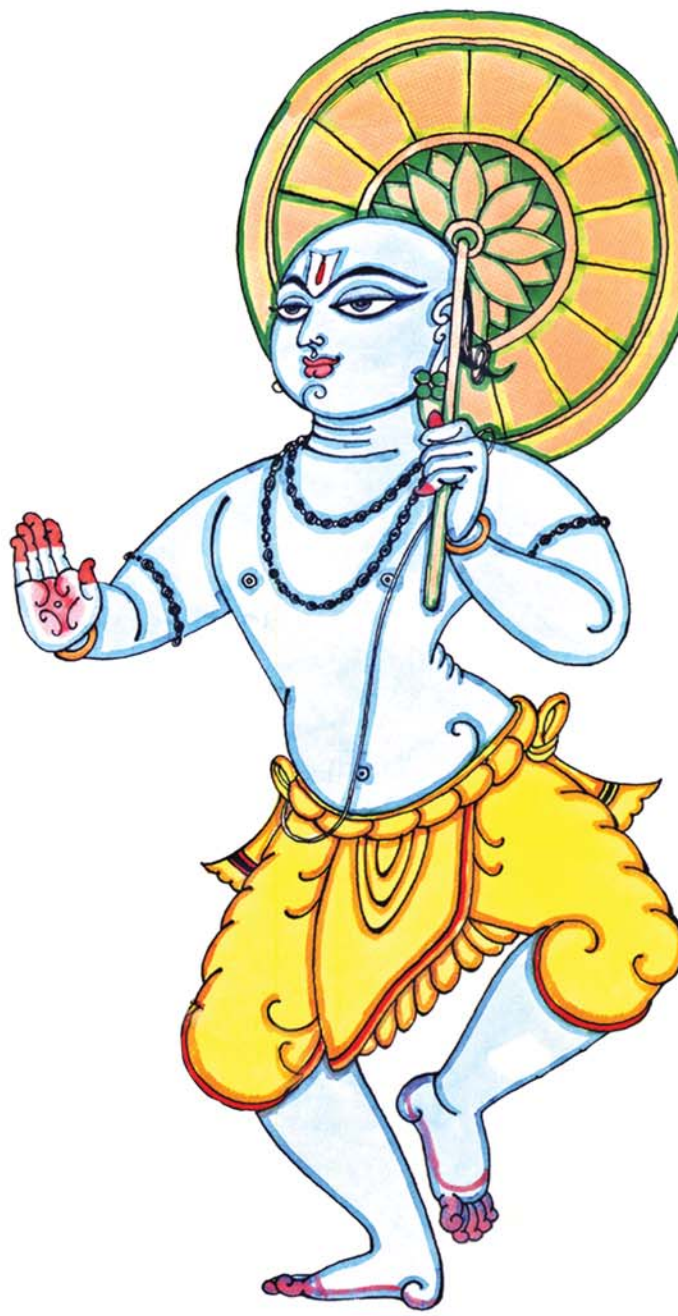

श्रीहरि विष्णु का

वामन अवतार

- श्रीमती प्रीति ज्योतिन्द्र अजवालिया

वामन जयंती के अवसर पर...

आप के गर्भ में प्रवेश कर के पुत्र के रूप में पैदा होकर आपके संतान की रक्षा करूँगा। देवतागण की रक्षा करके इन्द्रपद पुनःस्थापित करूँगा। ऐसा वचन सुन के माता अदिति बहुत प्रसन्न हुई।

वामन भगवान का जन्म वृत्तांत

भगवान का वचन सुन के अति खुश होकर माँ अदिति पति कश्यपजी की सेवा करने लगी। कश्यप मुनि सत्यदर्शी थे। उन्होंने समाधि योग से सब हकीकत जान ली। वामन भगवान के जन्म के बारे में सुनकर ब्रह्माजी बहुत खुश हुए, जब भगवान ने माता अदिति के गर्भ में प्रवेश किया तब ब्रह्माजी ने दिव्य वाणी में भगवान की दिव्य स्तुति की। जगत्पिता की स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान शंख, चक्र, गदा, पद्म-चतुर्भुज रूप में माता अदिति के सामने उपस्थित हुए। प्रभु का रूप बहुत मनोरम था। बहुत ही सुंदर रूप प्रगट हुआ। तब दश दिशाएँ शुद्ध और पवित्र बन गई, नदी-सरोवर का जल शीतल हो गया, भूमाता आनंदित बन गई, प्रकृति चारो ओर खिल उठी, इस समय चंद्रमाँ श्रवणा नक्षत्र में विराजमान थे। भाद्रपद शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि, अभिजीत मुहूर्त के समय पर अदिति माता की कोख से भगवान का प्रकटित हुआ। सुंदर और प्रसन्नोचित वातावरण था।

उपस्थित तमाम देवतागण तमाम यह नक्षत्रगण और जगत्पिता ब्रह्माजी ने मंगल स्तोत्र का पवित्र गान किया, सूर्यनारायण देव आकाश मार्ग से प्रभु का दर्शन कर रहे थे। शंख, मृदंग, ढोल, शहनाई का मंगल ध्वनि प्रभु का स्वागत सन्मान कर रही थी। इस पवित्र तिथि 'विजयद्वादशी', 'वामनद्वादशी' के नाम से प्रचलित हुई।

वामन भगवान के दिव्य स्वरूप

शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी भगवान योगमाया से अपना रूप को समेट लिया और छोटासा बालक बनके ब्रह्मचारी रूप धारण किया। प्रभु वामन स्वरूप में प्रवेशित हुआ। इस समय वामन भगवान का उपनयन संस्कार और जातिकर्म संस्कार हुआ, भगवान सूर्य ने वामन को गायत्री मंत्र उपदेश दिया, गुरु बृहस्पति ने यज्ञोपवित (ब्रह्मसूत्र) अर्पण किया, पिता कश्यपजी ने मेखला प्रदान की, भूदेवी ने कृष्णमृगचर्म, चंद्रदेव ने दंड, माता अदिति ने कोपीन (लंगोट), आकाशदेव ने छत्र, अविनाशी श्रीहरि वामन को ब्रह्माजी ने कमंडल, माता सरस्वती ने रुद्राक्ष की माला, यक्षराजा कुबेर ने भिक्षापात्र अर्पण किया। अंत में माँ जगदंबा ने स्वयं भिक्षा दी। इस तरह वामन भगवान कोपीन धारण करके हाथ में कमंडल-भिक्षापात्र धारण करके याचक का रूप धारण किया।

वामन का राजाबली की यगशाला की ओर प्रयाण... और बली से वार्तालाप

वामन भगवान को मालुम हुआ की, यशस्वी राजा बली, भृगुवंशी ब्राह्मण के आज्ञानुसार अश्वमेध यज्ञ कर रहे है, वामन भगवान ने वामन स्वरूप को लेकर यगशाला की ओर चल दिया, पृथ्वी डगमगने लगी।

राजा बली भृगुकच्छ शहर (गुजरात का भरूच शहर) में नर्मदा के तट पर ऋत्वीजों के साथ में रखकर उत्तम यज्ञ, अनुष्ठान कर रहे थे। वामन भगवान के आने से ऋत्वीजों और यजमानों का तेज अस्त हो गया। याचक स्वरूप वामन बालक का सभी ने बहुत आदर सत्कार किया। राजा बली ने वामन को आसन दिया और अभिवादन किया, पाद प्रक्षालन भी किया और सभी ने चरणामृत भी लिया। राजा बली बोले, ''आप हमारे यज्ञ में पधारे की हमारे पितृगण तृप्त हो गये। हमारा कुल पवित्र हो गया। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ? वामन ने उत्तर दिया की, मुझे भेंट, सोगाद, हीरा-जवेरात कुछ भी नहीं चाहिए। मुझे यगशाला बनाने के लिये सिर्फ तीन डग भूमितल चाहिए। वामन की ऐसी वाणी सुनकर राजा बली हँसने लगा।

इस वक्त दैत्यगुरु शुक्राचार्य सब समझ गया था, उसने राजा बली को मार्गदर्शन दिया की ये तो स्वयं भगवान है, देवता कार्य सिध्द करने हेतु अदिति के गर्भ से विष्णु ने जन्म लिया है (एक बात उल्लेखनीय है की वामन भगवान का नाम उपेन्द्र हुआ क्योंकि अपने बडे भाई इन्द्र का शासन सलामत रखने के लिये इन्द्र का छोटा भाई बनकर जन्म लिया)। राजा बली ने गुरु को प्रणाम किया की मेरा धन्य भाग्य की खुद भगवान याचक बनकर यहाँ पधारे। वो जो माँगेगा वो में देने के लिए वचनबध्द हूँ। भगवान की इच्छा के अनुसार तीन डग पृथ्वी देने का वचन दिया।

वामन बालक ने राजा बली को हाथ में जल लेने की आज्ञा दी। संकल्प के लिये, इसी में से जल लिया, लेकिन शुक्राचार्य बली का हीतेच्छु था। इसलिये झारी के जलमार्ग में जल रोकने के लिये घुस गया। प्रभु समझ गया उसने कुश से जलमार्ग को ठीक किया, तब कुश शुक्राचार्य की आँख में घुस गया। शुक्राचार्य की एक आँख चल बसी, शुक्राचार्य यहाँ से भाग गये। बली ने अंजली में जल लेकर संकल्प किया। इस समय एक अद्भूत घटना निर्माण हुए, प्रभु वामन में से विराट बन गये। बहुत ही विराट हुए। विराट हो कर प्रभु ने प्रथम डग में पृथ्वीलोक का समस्त विस्तार नाप लिया, दूसरे डग में स्वर्ग और आकाश नाप लिया, तीसरे डग के लिये कुछ बचा ही नही, तब राजा बली ने कहा की तीसरा डग मेरे सिर पर रख के मुझे धन्य बना लो, आज मेरा अभिमान भंग हुआ है।

वामन भगवान का आशीर्वचन :

प्रभु ने तीन डग में राजा बली से तीनों लोक का अधिकार छीन लिया। बली को बहुत प्रायश्चित हुआ। बली की भक्ति देखकर भगवान ने उसे आशीर्वचन के रूप में पाताल लोक का साम्राज्य दे दिया। भगवान ने स्वर्ग और पृथ्वी का साम्राज्य पुनः बडे भाई इन्द्र को दिया।

एक बात ऐसी भी है, राजा बली ने भगवान को पाताल में साथ में रहने का वचन भी लिया था। उस वचन को रखकर भगवान हमेशा के लिये पाताल में क्षीरसागर में चल बसे। स्वर्ग और वैकुंठ निस्तेज बन गया, तब लक्ष्मी जी को प्रभु का विरह सहन नही हुआ। लक्ष्मीजी ने राजा बली को रक्षा बांधकर भाई बनाया और बली से भेंट, सोगाद के बदले में श्रीहरि की पाताल से मुक्ति माँगी। इस वक्त प्रभु श्रीहरि ने कहाँ की, बली का मान रखते हुए मैं चार मास तक पाताल में रहूँगा और ये समय देवशयनी एकादशी से लेकर देवउठी एकादशी तक चलेगा और 'चातुर्मास' के नाम से प्रचलित होगा।

ऐसी युक्ति करके बली को भाई बना के लक्ष्मीजी ने प्रभु को मुक्ति दिला दी और प्रभु ने वामन अवतार ले के देवों का कार्य किया।

प्रतिकात्मकता

वामन अवतार के रूप में विष्णु ने बली को यह बोध दिया की दंभ और अहंकार से जीवन में कुछ भी हासिल नही होता और यह भी की धनसंपदा क्षणभंगुर होती है। ऐसा माना जाता है की विष्णु के दिये वरदान के कारण प्रतिवर्ष बली धरती पर अवतरित होते है और यह सुनिश्चित करते है की उनकी प्रजा खुशहाल है।

भारत के समस्त श्रीवैष्णव मंदिरों में भाद्रपद शुक्ल द्वादशी (वामन जयंती) का उत्सव बहुत धूम-धाम से मनाया जाता है, भक्तलोग वामन भगवान को ककडी, दही और पंजरी का प्रसाद अर्पण करता है। पुराण में लिखा है कि भक्तलोग वामन वृत्तांत का अध्ययन, मनन करेंगे तो जन्म बंधन से मुक्त होकर मोक्ष पद को प्राप्त फल लेते है। ऐसे मुक्तिदाता प्रभु श्री वामन भगवान को कोटि कोटि वंदन।

जय श्रीमन्नारायण।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

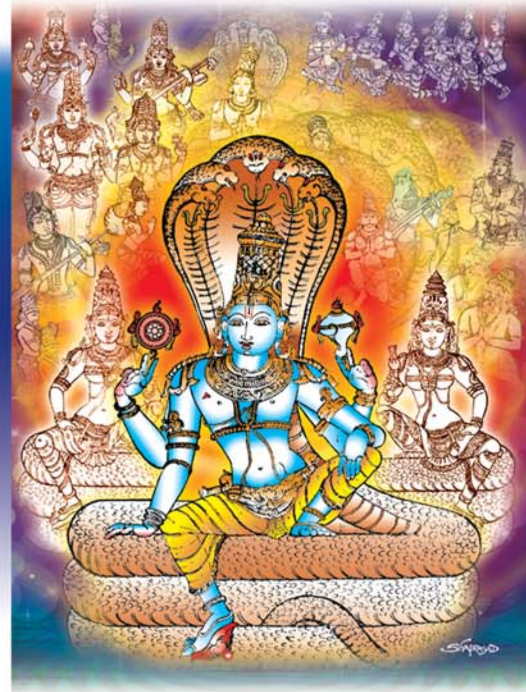

62) तिरुइडवेन्दै - (तिरुविडन्दै)

चेन्नै से 40 कि.मी. पर - चेन्नै महाबलिपुरम बस मार्ग में हैं। बस आदि की सुविधाएँ हैं।

मूलमूर्ति - भूदेवी को अपना बाई ओर गले लगाते लक्ष्मी वराहपेरुमाल-पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सवर - नित्यकल्याणप् पेरुमाल (गाल में बिंदी है)।

तायार (माताजी) - कोमलवल्लि नाच्चियार, श्रीरंगनाथन, रंगनायकी, आण्डाल सन्निधि भी हैं।

तीर्थ - कल्याण तीर्थ, वराह तीर्थ।

विमान - कल्याण विमान।

प्रत्यक्ष - मारकण्डेय।

विशेष - बाईं (तरफ) गोद में लक्ष्मी विराजमान हैं। इसलिए तिरुइडएन्दै। यहाँ के पेरुमाल के दर्शन करने से बहुत दिन से रुके विवाह शीघ्र तय होकर संपन्न होते हैं।

मंगलाशासन - तिरुमंगै आल्वार, 13 दिव्य पद।

63) तिरुक्कडल मल्लै (महाबलिपुरम - अर्ध सेतु)

यह क्षेत्र चेन्नै से 55 कि.मी. दूरी पर है। बस आदि की सुविधा है।

मूलमूर्ति - स्थल शयन पेरुमाल, पूर्वाभिमुखी, भूमि पर शयनित - दाएँ हाथ सीने पर उपदेश मुद्रा में है। मैंने ज्ञान तमिल की रचना की। भूमि पर शयनित है - इसलिए स्थल शयन पेरुमाल कहते हैं।

उत्सवर - उलहुय्य निन्ड्र पेरुमाल।

तायार (माताजी) - निलमंगैत्तायार - (अलग सन्निधि आसीनस्थ दर्शन)।

तीर्थ - पुण्डरीक पुष्करिणी, गरुड नदी।

विमान - गगनाकृति विमान, (अनन्त निलै विमान)।

प्रत्यक्ष - पुण्डरीक महर्षि।

विशेष - भूतत्ताल्वार का अवतार स्थल। यहाँ कई बहुत सुन्दर शिल्प कलाकृतियाँ है। पत्थर में खुदवाकर पाँच बडे रथ निर्मित हैं। समुद्र के किनारे स्थल शयन पेरुमाल की शयनित मूर्ति है। आजकल यह एक मुख्य पर्यटन केन्द्र है।

64) तिरुक्कडिकै - शोलिंगपुरम - (चोलसिंहपुरम)

चेन्नै - अरक्कोणम्, तिरुत्तणि रेल मार्ग अरक्कोणम रेल्वे स्टेशन से 27 कि.मी. दूरी पर बस मार्ग में है। तिरुत्तणि से भी जा सकते हैं। यहाँ पेरिय(बडी) पहाडी पर योग नरसिंह मंदिर, छोटी पहाड़ी पर योगांजनेय मंदिर है। पहाड तले भक्तवत्सल पेरुमाल है।

1) शोलिंगपुरम (शोलंगर) शहर में

मूलवर - बड़े पहाड़ पर विराजमान हैं।

उत्सवर - भक्तवत्सल पेरुमाल (तक्कान) गर्भगृह के पीछे आदिकेशव पेरुमाल सन्निधि है। आल्वार, आण्डाल, आचार्य की सन्निधियाँ हैं।

पेरियमलै - बडे पहाड़ घटिकाचल। वर्ष भर में ब्रह्मोत्सव एवं सभी उत्सव आदि नीचे के मंदिर

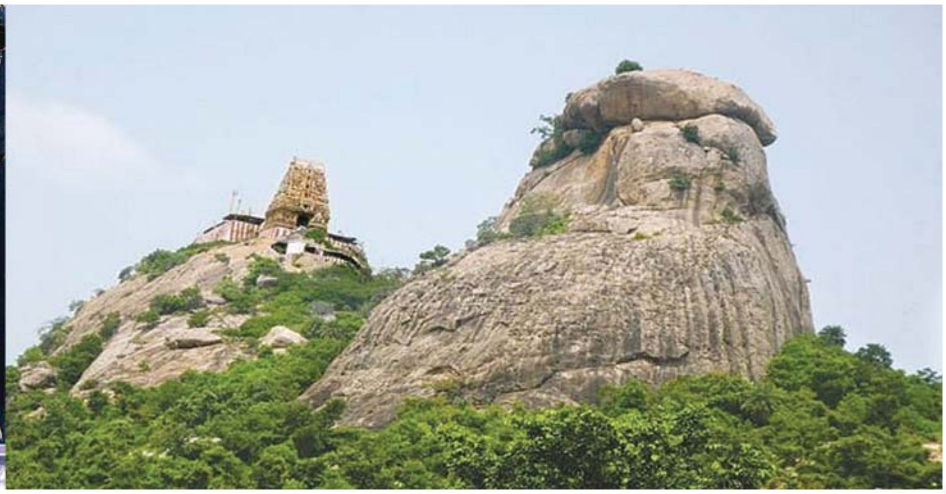

में ही होते हैं। यह पहाड़ लगभग 750 फुट ऊँचा है।

मूलमूर्ति - योग नरसिंहर (तमिल-अक्कारक्कनि) (अक्कारमः गुड़; कनि-फल) पूर्वाभिमुखी - योगासनस्थ।

तायार (माताजी) - अमृतवल्लि (अलग सन्निधि)।

तीर्थ - ब्रह्म तीर्थ, तक्कान पुष्करिणी।

विमान - सिंहकोष्टाकृति, हेमकोटि विमान (सिंहाग्र विमान)।

प्रत्यक्ष - चिरिय तिरुवडि आंजनेय(हनुमान)।

चिन्न मलै - छोटी पहाड। यह एक अलग पहाडी है और पेरिय मलै - बडा पहाड से थोडी दूर पर है। यहाँ आंजनेय (हनुमान) के चार हाथ पश्चिमाभिमुखी योगासनस्थ-नरसिंह का दर्शन करते हुए हस्त है। हाथ में शंख, चक्र है। यहाँ - इस क्षेत्र में एक घटिकै (लगभग) 1.30 घंटा मात्र रहने से सब पीडाएँ दूर होकर मोक्ष प्राप्ति होगी। इसलिए, घटिकाचल एवं तिरुघटिकै नाम है। विश्वामित्र ने एक घटिकै (नाळिहै - तमिल शब्द) स्तुति कर ब्रह्म-ऋषि उपाधि प्राप्त की। शोलिंगपुर शहर से मेइन रोड में - तक्कान पुष्करिणी के पास गरुड वरदराज पेरुमाल सन्निधि हैं।

स्थल पुराण बताता है यहाँ के आचार्य दोड्डाचार्य को (16वीं सदी) कांची वरदराज भगवान ने गरुड वाहन में दर्शन दिए। सप्तऋषियों ने नृसिंह अवतार के दर्शन की कामना से यहाँ तपस्या की। एक घटिकै में दर्शन प्राप्त होने से इस क्षेत्र का 'घटिकाचल' नाम पडा।

यह क्षेत्र एक विशेष प्रार्थना स्थल है। एक मंडलम (42 दिन) की प्रार्थना के अनन्तर शून्य, आदि कई व्याधियाँ यहाँ (टक्कद्युतिति यहाँ) तक्कान पुष्करिणी में स्नान कर दोनों पहाडों पर भगवान के दर्शन कर - परिक्रमा करने से उनकी सब बीमारियाँ दूर होकर स्वस्थ एवं प्रसन्न हो पाते।

मंगलाशासन - दो आल्वार, कुल 4 दिव्य पद।

यहाँ वे आचार्य बताते हैं कि नम्माल्वार ने भी मंगलाशासन किया है - एक दिव्य पद।

क्रमशः

मिथ की महिला चरित

हिडिंबा

- डॉ.के.एम.भवानी

भगवान की सृष्टि में दिखनेवाली विविधताओं को जान सकना आसान बात नहीं है। हर एक विषय के पीछे कुछ न कुछ रहस्य जरूर छिपा रहता है। वेदव्यास जी से रचित इतिहास 'महाभारत' में ऐसी कई घटनाएँ देखने को मिलती हैं, जो हमें चकित करने के साथ-साथ सोचने पर भी मजबूर करती हैं। महाभारत में लोकरीति और धर्म के विरुद्ध अग्रज युधिष्ठिर के पहले अनुज भीम की शादी हो जाती है, वह भी एक राक्षस कन्या के साथ। यह बहुत आश्चर्य की बात है। वहीं राक्षस कन्या 'हिडिंबा' है। हिडिंबा का पात्र महाभारत में कम दिखने वाली पात्र होने पर भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वारणावत में जब पांडव माता कुंती के साथ लाक्षागृह की दुर्घटना से बचकर सुरंग मार्ग से निकलकर जंगल में पहुँचते हैं, तब भीम के अलावा बाकी सब बहुत थककर एक पेड़ के नीचे गहरी नींद में डूब जाते हैं। भीम अकेला जागते हुए उनकी रखवाली करता रहता है। उसी जंगल में हिडिंबासुर नामक राक्षस रहता है। जब वह अपने वन में मानवों (पांडवों) को देखता है, तब वह अपनी बहन हिडिंबा को बुलाकर मानवों को मारकर, पकाकर खिलाने को कहता है। तब भाई की आज्ञा पर मानवों को मारकर भाई को खिलाने केलिए हिडिंबा निकलती है। अचानक हमला करने के पहले उनके बारे में जानने के लिए हिडिंबा एक पेड़ के पीछे छिपकर देखती है। तब वह सोती हुई माता और भाईयों की रखवाली करनेवाला भीम को देखती है। भीम को देखते ही वह उस पर मोहित हो जाती है इसलिए तुरंत मानव रूप धारण करके भीम के पास पहुँचती है। उसको देखते ही भीम रात के समय जंगल में अकेला घूमना खतरनाक की बात कहते हुए उसे वहाँ से चले जाने को कहता है। तब हिडिंबा उससे इस तरह कहती है- ''हे पुरुषोत्तम। मैं हिडिंबासुर की बहन हिडिंबा हूँ। तुम्हे देखते ही मुझे तुम्हारे ऊपर मोह पैदा हो गया है। तुम मुझसे शादी करो। तब मेरे भाई से तुम्हें कोई हानि नहीं होती। मैंने इस जनम में तुम्हें पति मान चुकी हूँ। मेरा भाई बहुत ही बलवान है। वह देवेंद्र से भी नहीं डरता है। जो सभी यहाँ अपना घर में सोने की तरह आराम से सो रहे हैं, उन्हें मेरे भाई के बारे में जानकारी नहीं है। हिडिंबासुर के बारे में जाननेवाला इस वन में दाखिल होने का साहस भी नहीं करता है। इसलिए इन सभी को जल्दी से नींद से जागृत करके कहीं दूर भेजो। हम दोनों अपने मन पसंद प्रदेश को जाकर शादी करेंगे। वहाँ हम दोनों खुशी से जिंदगी बिताएँगे।'' हिडिंबा की इन बातों को सुनकर भीम इस तरह कहता है- ''हे हिडिंबा! तुम बहुत नादान लग रही हो। कोई भी पुरुष अपने पौरुष को छोड़ेगा क्या? एक स्त्री के लिए माता और भाइयों को छोड़ कर भाग जाएगा क्या।'' तब हिडिंबा कहती है कि - ''अगर तुम्हें अपने परिवार को बचाना ही मुख्य लगता है तो जल्दी से इन सभी को लेकर हिडिंबासुर के आने के पहले ही भाग जाओ।'' तब भीम हिडिंबा से कहता है - ''हे हिडिंबा! एक बलवान राक्षस के आने की बात जानकर, डरकर क्या मैं इनकी नींद खराब करूँ? नहीं। तुम्हें अपने भाई के बारे में ही मालूम है, मेरे बारे में नहीं। एक नहीं, सौ हिडिंबासुर आने पर भी मैं उन सभी को तेरे आंखों के सामने ही मार देता हूँ। लेकिन मैं इनकी नींद को बिल्कुल खराब नहीं होने दूँगा। तुम मेरी चिंता छोड़ कर अपने भाई को जल्दी से भेज दो।'' इस तरह भीम अपनी वीरता के बारे में बताते समय ही हिडिंबासुर अपनी बहन को ढूँढते हुए वहाँ आता है और देर करने के कारण बहन पर गुस्सा प्रकट करने लगता है तो हिडिंबा डरकर भीम के पीछे जाकर छिप जाती है।

माता कुंती और अन्य भाईयों को निद्रा भंग नहीं होने केलिए भीम हिडिंबासुर को दूर ले जाता है। दोनों के बीच में भयंकर युद्ध होने लगता है। तब एक बार हिडिंबासुर भयंकर सिंहनाद करता है तो उस गर्जना जैसी आवाज से कुंती और उसके पुत्र नींद से उठ जाते हैं। तब कुंती सामने रही हिडिंबा

को देखकर उसे वन देवता या कोई देव कन्या समझती है और पूछती है कि वह कौन है? और उस जंगल में क्यों आई है? तब बात बढ़ाती हुई हिडिंबा कहती है कि वह राक्षस हिडिंबासुर की बहन हिडिंबा है। भाई की आज्ञा पर उन सभी को मारने आई लेकिन भीम को देखते ही उस पर मोहित होकर उसे पति मान लेती है। यहीं बात भाई से भी बताने पर वह क्रोधित होकर बहन को मारना चाहकर उस पर हमला करने की कोशिश करता है तो भीम उससे लड़ने लगता है। ऐसा कहने के बाद हिडिंबा बात को आगे बढाती हुई यह भी कहता है कि बहुत कम समय में ही भीम हिडिंबासुर को मारकर विजय प्राप्त करेगा। तब सभी का कुशल-मंगल होगा। इस प्रकार हिडिंबा दानवी होने पर भी भीम को पति मानते ही उसके परिवार का कुशल सोचने लगती है। यह उसके अद्भुत व्यक्तित्व का द्योतक है।

हिडिंबा की बातों को सच बनाते हुए भीम हिडिंबासुर को मारकर विजयी होकर आता है। भीम की प्रशंसा करते हुए माता कुंती और अन्य पांडव वहाँ से निकलने लगते हैं तो उनके साथ हिडिंबा भी चलने लगती है तब भीम उसे मना करते हुए कहता है कि दानव कभी भी विश्वास करने लायक नहीं है। प्रतिकार भावना से जलते हुए वे कभी भी दूसरों को आसानी से मार देते हैं इसलिए हिडिंबा को उनके साथ नहीं चलना है। लेकिन युधिष्ठिर जो भीम का बड़ा भाई है, वह भीम को समझाता है कि उन सभी को हिडिंबा को देखने पर बंधु ही लग रही है। उसे दानवी मत समझना है और तो और वह भीम की शरण में आई है उसकी रक्षा करना धर्मज्ञ का कर्तव्य है। इन बातों को सुनकर हिडिंबा युधिष्ठिर और माता कुंती को प्रणाम करती है।

माता कुंती से एकांत में मिलकर हिडिंबा इस तरह कहती है- ''माता मैं इस जनम में आपके पुत्र भीम को अपना पति मान चुकी हूँ। माता सारी प्राणियों को काम वासना अत्यंत सहज है। मैं भीम केलिए अपने सारे दोस्तों और रिश्तेदारों को छोडकर आई हूँ। अगर भीम मुझे इनकार करता है तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी इसलिए आप मुझे बचाकर मेरी रक्षा करेंगी तो मैं भी आपकी मदद करूँगी। माता! आप मुझे सामान्य स्त्री मत समझिए। मुझे भविष्य ज्ञान भी मालूम है। यहाँ से थोड़े ही दूर पर महर्षि शालीवाहन का आश्रम है। वहाँ के जलाशय में पानी से भूख प्यास मिट जाते हैं। आप लोग वहाँ पहुँचने के बाद महर्षि वेदव्यास आपको मिलने आएँगे।'' हिडिंबा की पवित्र और सत्य भरी बातों को सुनकर कुंती उसके स्वच्छ मन को पहचान लेती है। भीम को बुलाकर कहती है कि ''हे भीमसेन! मैं या तुम्हारे बड़े भाई युधिष्ठिर हमेशा तुम्हें धर्म मार्ग पर चलने को ही कहेंगे। इसलिए तुम हम जैसा कहेंगे, वैसा करो। हिडिंबा पतिव्रता नारी है। इसके मन में कोई कलुष भावना नहीं है। तुम इससे विवाह करके एक पुत्र को प्राप्त करो।'' तब भीम हिडिंबा से कहता है कि जब तक उसे पुत्र प्राप्ति होगी, तब तक वह उसके साथ रहेगा।

सारे पांडव कुंती और हिडिंबा के साथ शालिहोत्र महर्षि के आश्रम में पहुँचते हैं। वहाँ रहते समय जैसा हिडिंबा ने कुंती से कहा, वैसे ही भगवान व्यास आकर उनसे मिलते हैं। कुंती को उसको मिले कष्टों के लिए सांत्वना देते हुए उससे कई धर्म बद्ध बातें कहते हुए, वहीं पर उपस्थित हिडिंबा को देखकर कहता है कि हिडिंबा नाम से प्रसिद्ध उसका असला नाम कमलपालिका है। वह दानवी होने पर भी स्वभाव से पवित्र है। भीम से उसको जो पुत्र पैदा होगा, वह भविष्य में पांडवों के लिए बहुत मददगार साबित होगा। इन बातों को सुनकर कुंती भी बहुत खुश हो जाती है। बाद में हिडिंबा भीम से खुशी की जिंदगी बिताकर घटोत्कच नामक अत्यंत शक्तिशाली पुत्र को जन्म देती है। वह पुत्र जन्म लेते ही यौवन दशा प्राप्त कर सकल शास्त्र सीख लेता है। कामरूप (मन पसंद रूप) बनना भी जान लेता है। एक दिन माता-पिता को नमस्कार करके जब कभी भी उन्हें कोई भी मदद की आवश्यकता पड़ने पर उसे याद करने से जरूर आकर मदद करने का वादा करके चला जाता है। कुछ समय के बाद पांडव माता कुंती के साथ व्यासजी की आज्ञा के अनुसार एकचक्रपर में रहने केलिए चले जाते हैं। इस प्रकार हिडिंबा दानवी होने पर भी अपने सद्गुणों और सच्चाई के कारण उत्तम धर्म का पालन करनेवाला कुरु वंश के पांडव भीम की पत्नी बनकर पांडवों को पहला वारिस देने की यश पाई।

शुभमस्तु।

अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायक का ब्रह्मोत्सव

तेलुगु मूल - डॉ.आई.एल.एन.चंद्रशेखर राव

अनुवादक - डॉ.जी.शेक षावली

समस्त ब्रह्मांड का परम पूज्य दैव... सर्वमंगल स्वरूप जगत के रक्षक, दीन बंधु, आपद् बांधव, पाप नाशक और समस्त लोकों के पालनहार, दुष्ट संहारक, शिष्ट्जन रक्षक महान सम्राट तिरुमल के श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी को साल भर की कई सेवाएँ करने पर भी, अनेक उत्सव धूमधाम से, मुग्ध मनोहर रूप से मनाये जाने पर भी संपूर्ण वैभव ब्रह्मोत्सव में ही निक्षिप्त है... ब्रह्म ने, स्वयं इस ब्रह्मोत्सव को अपने कर कमलों से मनाते हैं। इसलिए इस उत्सव में, हर अंश अपूर्व, अनमोल, अमोघ, अद्भुत, अतुलनीय प्रत्येक विशेषता झलकती है।

हर सेवा अत्यंत देदीप्यमान है अर्थात - यह न भूतो न भविष्यति है!! इस ब्रह्मोत्सव का दर्शन प्राप्त होना हमारा परम भाग्य - पूर्व जन्म का सुकृत है!!!

नारायण पर्वत पर पुष्करिणी के किनारे, कन्या भाद्रपद मास में एकादशी तिथि, सोमवार के दिन श्रवणा नक्षत्र सिद्धयोग घड़ियों में कलियुग प्रत्यक्ष दैव भक्तजन उद्धार के लिए भगवान श्रीनिवास वेंकटाद्री पर्वत पर अवतरित हुआ है कहकर पुराणों में स्पष्ट किया गया है।

वैकुण्ठ छोड़कर लोक रक्षणार्थ के लिए, वेंकटाद्री पर्वत पर बसे हुए, श्रीनिवास को ढूँढ़ते हुए सृष्टिकर्ता ब्रह्मदेव इत्यादि देवताओं ने, वेंकटाद्री आकर स्वामीजी का दर्शन कर परमानंदित हुए है।

''ध्वजारोहण पूर्वश्च कार्यस्तव महोत्सवः
सच त्वया महाभूमान् अंगीकार्यः श्रियासहा''

– वराहपुराण

हे श्रियःपति! ध्वजारोहण युक्त एक महोत्सव को मनाना चाहते हैं। महाप्रभु! इस महोत्सव को श्रीदेवी समेत करने की अनुग्रह कीजिए कहकर ब्रह्मदेव ने श्रीनिवास से प्रार्थना किया। स्वामीजी अपनी स्वीकार को प्रकट किया है। ब्रह्मदेव इस उत्सव को मनाने के कारण, यह उत्सव 'ब्रह्मोत्सव' नाम से सुप्रसिद्ध हुआ है। उस दिन से आज तक इस उत्सव को हर वर्ष अत्यंत शोभायमान रूप से भक्ति, श्रद्धा, परम निष्ठा के साथ ब्रह्मोत्सव मनाते आ रहे हैं। संपूर्ण ब्रह्मांड आनंदित हुए रूप में उत्सव मनाये जाते हैं। इसलिए इस उत्सव को 'ब्रह्मोत्सव' कहा गया हैं।

प्रप्रथम इस प्रकार तिरुमल श्रीनिवास स्वामीजी को 'ब्रह्मोत्सव' स्वयं सृष्टिकार ब्रह्म ने श्रीगणेश किया है अर्थात् प्रारंभ किया है... उस समय समस्त

देवताओं ने इस ब्रह्मोत्सव में उपस्थित हुए हैं। इस प्रकार पुराण काल से ब्रह्मोत्सव मनाते आ रहे हैं...

इतिहास में, अनेक राजा-महाराजाओं ने भी, स्वामीजी के ऐसे कई पवित्र उत्सव मनाते आये हैं। अपनी और अपने राज्य की उन्नति, युद्धों में पायी विजय कामना इत्यादी इच्छाओं की पूरी होने पर, शासक, कृतज्ञता से इन उत्सवों को मनाये हैं। तिरुमल-तिरुपति में प्राप्त हुए शासनों में इस उत्सव की विशेषताओं के बारे में लिखित रूप में लिपि बद्ध प्रमाणित किया है। अंग्रेजी के शक वर्ष 7वीं शताब्दी से पहले तिरुमल में ध्वजारोहण, ध्वजावरोहण कार्यक्रम मात्र मनाकर, बचत उत्सवों को शेषाचल चरणतल गाँव 'तिरुचानूर' में मनाते थे। 614वे वर्ष में पल्लव रानी 'पेरुंदेवी' ने, 'सामवाय मनवालपेरुमाल' नाम पर चाँदी के उत्सवमूर्ति को तिरुमल देवस्थान को भेंट दी। इस उत्सवमूर्ति को 'श्री भोगश्रीनिवास मूर्ति' कह गया है। 'पुरटासी तमिल मास में मनाये जाने वाले ब्रह्मोत्सव से पहले इस उत्सवमूर्ति को तिरुवीथियों में भक्त दर्शन के लिए जुलूस निकालने का प्रबंध रानी ने किया है। उस समय से तिरुमल में रानी के करकमलों से आदि उत्सव प्रारंभ करने का श्रीगणेश किया है।

(1248-1263) सन् 1254 ई. वर्ष चैत्र मास में, दक्षिण आंध्रा और कांची के शासक नेल्लूरु चोडुला तेलुगु चोलराज त्रिभुवन सम्राट के रूप में विख्यात हुए, 'विजयगोंड गोपाल' ने इस 'ब्रह्मोत्सव' को मनाया है।

(1321-1337) सन् 1328 ई. वर्ष में, सम्राट 'तिरुवेंकटनाथ यादवरायलु' ने आषाढ़ मास 'आडि तिरुनाल्लु' नाम पर 'उत्सवों' को मनाया है। तमिलनाडु के इळ्तूरुनाडु के पोंगल्लूरु नामक गाँव की आमदानी में आधा भाग श्री स्वामीजी को सर्वमान्यम् के रूप में दान समर्पित करते थे। इस दान को 'आणि'(तमिल) मास में संपन्न करनेवाले 'ब्रह्मोत्सवों' के खर्च केलिए किया। (1379-1399) सन् 1388 ई. वर्ष के जनवरी 18वी तारीख को विजयनगर साम्राज्य के संगम वंश के शासक दूसरा 'हरिहर रायलु' ने 'पुंदोडु' नामक गाँव को स्वामीजी को समर्पित किया है। उस गाँव से आनेवाली आय से मासी तमिल माह में ब्रह्मोत्सव को मनाने का निर्णय लिया है।

(1419-1444) सन् 1429 ई. वर्ष दिसंबर 5वी तारीख को विजयनगर साम्राज्य के संगम वंश के 'दूसरा देवरायलु' शासक ने अपने शासन काल में तिरुमल पुण्य क्षेत्र के श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का दर्शन कर, आश्वीयुज मास में पुनर्वसु नक्षत्र से स्वाति नक्षत्र तक 9 दिन ब्रह्मोत्सव मनाने का प्रबंध किया है।

विजयनगर साम्राज्य के सालुव वंश के शासक 'सालुव नरसिंह रायलु' समय में साल में 7 बार ब्रह्मोत्सव मनाने के लिए निर्णय लिया हैं।

(1509 से 1529 तक) विजयनगर साम्राज्य के साहित्यिक, ललित कलाओं के पोषक, तेलुगु भाषा के सुप्रसिद्ध कविकार, महान युद्ध वीर और सुशासक श्रीकृष्णदेवरायलु श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का रिश्ता 'चोली दामन का रिश्ता' अर्थात् बहुत गहरा था। अपने शासन काल में 7 बार तिरुमल

क्षेत्र के श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का दर्शन किया है। सन् 1513 ई.वी मई 2 तारीख को दूसरी बार और इसी वर्ष जून 13वी तारीख को तीसरी बार अपनी प्रिय दो रानियाँ समेत तिरुमल क्षेत्र का दर्शन कर, हीरे, रत्न जडित मोतियों से बने हुए, अनेक अमूल्य स्वर्ण-चाँदी के आभूषण और पूजा केलिए पूजा सामग्री और कई ग्रामों को भी स्वामीजी को समर्पित किया है। अपने माता-पिता के आत्म उद्धारण के लिए, हर वर्ष 'तै' तमिलमास में उत्सव मनाने का प्रबंध किया है कहकर ऐतिहासिक आधार सहित प्रमाणित करते हैं।

सन् 1529 ई. में श्रीकृष्णदेवरायलु के बाद अच्युतदेवरायलु ने तिरुमल मंदिर में ही, विजयनगर साम्राज्य के सम्राट के रूप में सिंहासन पर आरूढ़ हुए है। उन्होंने 1530 ई. में अपने नाम पर 'अच्युतराय ब्रह्मोत्सव' नाम पर ब्रह्मोत्सव को मनाये हैं।

इस प्रकार विभिन्न शासकों के काल में, अंग-रंग, धूप-दीप, नैवेध्यों से, धूम-धाम के साथ वेदपंडितों के मंत्रोच्चारण से श्रद्धा-भक्ति के साथ 'ब्रह्मोत्सव' मनाते आ रहे थे। इस प्रकार 1583 ई. वी तक साल में हर मास ब्रह्मोत्सव चलते थे। समय बीतते साम्राज्य और शासक, कालगर्भ में लीन हो जाने के कारण, उत्सव भी रुक गए है। अंत में ब्रह्म से प्रारंभ हुए 'ब्रह्मोत्सव' मात्र 'दिन दुनी रात चौगुनी की तरह' अर्थात् आज भी धूम-धाम से तिरुमल तिरुपति देवस्थान मनाता आ रहा हैं।

सर्वसाधारण से, किसी भी मंदिर में, किसी एक मास में, एक शुभ तिथि के दिन, उत्सव श्रीगणेश कर निर्वहण करते हैं। लेकिन तिरुमल मंदिर में अंतिम दिन को भी हिसाब में लेकर मनाना एक अद्भुत विशेष है। 'कन्यामास' माने सूर्य कन्या राशि में संचरित मास में श्रवणा नक्षत्र के दिन अवभृथ स्नान का निर्णय कर, उसका पहले आनेवाले 9 दिनों से उत्सव को संपन्न करना शुरू

करते है। अवभृथ माने चक्रस्नान। साधारणतः कन्या मास आश्वीयुज मास में आते है। इसीलिए ब्रह्मोत्सव दशहरा त्योहार के समय में मनाते हैं। चान्द्रमान के प्रकार तीन वर्षों में एक बार 'अधिक मास' आता हैं। इस समय में कन्या मास भाद्रपद मास में आता है। इसलिए 'भाद्रपद मास' में 'ब्रह्मोत्सव' मनाते हैं। फिर आश्वीयुज मास में दशहरा के समय में भी 'ब्रह्मोत्सव' मनाते हैं। अर्थात - 'अधिक मास' के समय में 2 बार ब्रह्मोत्सव मनाते हैं। प्रप्रथम मनाये जानेवाले ब्रह्मोत्सव को 'सालकट्ला(वार्षिक) ब्रह्मोत्सव' कहते हैं। दशहरा के समय में मनाये जानेवाले उत्सव को 'नवरात्रि ब्रह्मोत्सव' नाम से व्यवहार करते है। इस प्रकार दो ब्रह्मोत्सव आने पर, 'सालकट्ला(वार्षिक) ब्रह्मोत्सव' यथाविधि के अनुसार चलते हैं।

नवरात्रि के ब्रह्मोत्सव में 'ध्वजारोहण' और 'ध्वजावरोहण' नहीं मनाते हैं। उसी प्रकार सालकट्ला(वार्षिक) ब्रह्मोत्सव में 8वे दिन के 'रथोत्सव' में स्वामीजी 'लकड़ी से बने रथ' पर बैठ कर जुलूस में निकलते हैं। लेकिन दशहरा उत्सव के ब्रह्मोत्सव में 'स्वर्णरथ' पर बैठ कर जुलूस में निकलते हैं। उसी प्रकार 'सालकट्ला(वार्षिक)

ब्रह्मोत्सवों' में रात के वाहन सेवा के अनंतर मंदिर के अंदर तिरुमलराय मंडप में हर दिन स्वर्ण के झूले में बिठाकर दरबार चलाते हैं। नवरात्रि के ब्रह्मोत्सवों में रंगनायक मंडप में शेषवाहन पर बिठाकर दरबार चलाते हैं।

ब्रह्मोत्सवों के प्रारंभ के पहले आनेवाले मंगलवार को 'कोयिल आल्वार तिरुमंजन' मनाता हैं अर्थात- 'मंदिर को साफ करते हैं।' ब्रह्मोत्सवों के पहले दिन शाम को 'अंकुरार्पण' कार्यक्रम मनाते हैं। स्वामीजी के 'सेनाधिपति विष्वक्सेन' जुलूस में वसंत मंडप तक जाकर बिल की मिट्टी को इकट्टा करके लाते हैं। मंदिर के यागशाला में नई मिट्टी के बर्तनों में नौ प्रकार के बीजों(नवधान्य) को डालकर अंकुरार्पण करते हैं। ब्रह्मोत्सव ध्वजारोहण से प्रारंभ होते हैं, प्रथम दिन शाम को मंदिर में ध्वजस्तंभ पर गरुड़ पताक फहराते हैं। इसे ही 'ध्वजारोहण' कहते हैं। उसी दिन रात से वाहन सेवाएँ प्रारंभ होते हैं। इस ब्रह्मोत्सवों में श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी के उत्सवमूर्ति 'श्री मलयप्पस्वामीजी' वाहन में अधिरोहित होकर तिरुमाडावीथियों में भक्तों को अनुग्रह करते हैं अर्थात - 'भक्तों के इच्छाओं को पूरा करते हैं।' स्वामीजी विभिन्न प्रकार के रूपों में और विभिन्न वाहनों में तरह-तरह के अलंकारों से कुछ वाहनों में अकेले और कुछ वाहनों में अपने प्रिय दोनों देवेरियों के समेत जुलूस में निकलते हैं।

लघुशेषवाहन, हंस वाहन, सिंह वाहन, मोहिनी अवतार में पालकी (डोली) में, गरुड़, हनुमंत, गज, सूर्यप्रभा, चंद्रप्रभा, अश्व वाहन पर स्वामीजी अकेले जुलूस में निकलते हैं। महाशेषवाहन, मोतियों से बने मंडप वाहन, कल्पवृक्ष, सर्वभूपालवाहन, स्वर्णरथोत्सव में दोनों देवेरियों समेत स्वामीजी जुलूस में निकलते हैं। बालकृष्ण, कालीयमर्दन कृष्ण, योगमुद्रा में स्थित श्रीराम, राजाओं के रूपों में अलंकृत होकर निकलते हैं। सरस्वती देवी के रूप में हंसवाहन पर और 'कृतयुग' में मोहिनी किस प्रकार अमृत देवताओं को बाँटी घटना हमें स्मरण दिलाती हुए मोहिनी रूप में अत्यंत शोभायमान रूप से अंलकृत होकर 'डोली' में निकलकर भक्तों की माया मोह को विच्छिन्न कर अनुग्रह करते हैं।

ब्रह्मोत्सवों में 9वे दिन सुबह श्रीदेवी-भूदेवी समेत श्री मलय्यप्पस्वामीजी तिरुच्चिवाहन में जुलूस कर श्री वराहस्वामी मंदिर में पहुँचते हैं। चक्रत्ताल्वार भी पहुँचते हैं। वहाँ 'स्नपन तिरुमंजनम' का निर्वहण करते हैं। स्वामीजी की आयुध, श्री चक्रत्ताल्वार को पुष्करिणी में पवित्र स्नान करवाते हैं। इसी पवित्रस्नान को ही अवभृथ स्नान अर्थात - चक्रस्नान कहते हैं। उस दिन शाम को ब्रह्मोत्सव श्रीगणेश सूचक ध्वजस्तंभ पर गरुड़ पताक (झंडा) के रूप में फहराये हुए गरुड़ पताक को उतारते है। अर्थात इसे 'ध्वजावरोहण' कहते हैं। अर्थात गरुड़ पताक को फहरा कर, समस्त देवताओं का स्वागत करते हुए ब्रह्मोत्सव प्रारंभ होते है, तो इसी झंडे को ध्वजावरोहण करने का अर्थ - 'समस्त देवताओं को सादर पूर्वक बिदा करने की संबंधित सूचना देते हैं।'

इस प्रकार मनाये जाने वाले 'अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायक' के परम पवित्र 'ब्रह्मोत्सव' में समस्त भक्तजन, सुध-बुध खो कर, तिरुमाडावीथियों में अपने प्रिय स्वामीजी की दर्शन कर भक्तिगंगा प्रवाह में लीन होते है। अपने से जान-अनजान में हुए अज्ञान रूपी पाप परिहार की पश्चात्ताप में (क्षमा) मांगते हुए, तन-मन से नतमस्तक होकर, परमानंदित से पुलकित हो जाते हैं।

अनंत पद्मनाभ व्रत

- श्री ज्योतिन्द्र के अजवालिया

मानव ने इस धरातल पर जन्म लिया, जन्म को सार्थक करने हेतु हमारे वेद और पुराणों ने कई सारे व्रत विधान बताया है। ऐसे व्रत विधान से मानव अपने जन्म को अप्रतिम ऊँचाई पर ले जा सकता है। ऐसे एक व्रत के बारे में यहाँ जानकारी दी जा रही है।

अनंत पद्मनाभ व्रत

अनंत पद्मनाभ व्रत भगवान विष्णु को समर्पित एक हिंदू अनुष्ठान है। अनंत शब्द का अर्थ अंतहीन है। अनंत व्रत की भक्ति करके आप जीवन की चुनौतियों, दुखों और कठिनाईयों को दूर कर सकते हैं। कुछ भक्त लगातार 14 वर्षों तक व्रत का पालन भी करते हैं। इस व्रत में महिला और पुरुष दोनों भाग ले सकते हैं।

अनंत पद्मनाभ व्रत का इतिहास

अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा द्वापरयुग (महाभारत) का एक पुरानी प्रथा है। शौनकादि महर्षियों ने युधिष्ठिर को इस व्रत की सलाह तब दी थी जब वे वनवास में थे। उन्होंने कई ऋषियों से मुलाकात की और भगवान अनंत पद्मनाभ के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की। उन्हें 14 वर्षों तक लगातार इस व्रत को करने का विधान प्राप्त हुआ।

अनंत पद्मनाभ पूजा के बारे में विवरण

अधिकतर, जोड़े अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा करते हैं। अनुष्ठान भगवान गणेश और यमुना नदी की पूजा से शुरू होता है। पूजा शुरू करते समय आपको लाल अक्षत का प्रयोग करना चाहिए। श्री विष्णु सहस्रनाम से प्रार्थना करें। इस पूजा में धागे(रक्षासूत्र) का प्रयोग करें और आरती करें। महिलाएँ उन धागे(रक्षासूत्र) को अपने गले में पहन सकती हैं, जबकि पुरुष इसे अपने हाथों में पहन सकते हैं।

अनंत पद्मनाभ कहानी

पद्म कमल का प्रतीक है, जबकि नाभि के लिए है। तो, पद्मनाभ अपनी नाभि में कमल के साथ भगवान को संदर्भित करता है। यह भगवान विष्णु को इंगित करता है, जो ब्रह्मांड के निर्माण के दौरान एकर्णव सागर पर सो रहे थे। उनकी नाभि से एक कमल निकला, जिससे भगवान ब्रह्म का जन्म हुआ।

अनंत चतुर्दशी और अनंत पद्मनाभ व्रत के बीच की कड़ी

अनंत चतुर्दशी तब होती है जब भक्त भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, जिन्हें अनंत पद्मनाभ के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु एक विशेष दिन अनंत सयना रूप में पाए गए थे, और अनंत चतुर्दशी पर अनंत पद्मनाभ व्रत मनाया जाता है।

अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा के लाभ

अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा से आपको कई लाभ मिलेंगे। अधिक ज्ञान प्राप्त होता है। कर्म के कारण अपने पिछले पापों से छुटकारा मिलता है। अपने तन और मन को शुद्ध करता है। स्वस्थ जीवन का आनंद लेने में हमारी सहायता करता है। परेशानी मुक्त वैवाहिक जीवन प्राप्त होता है।

अनंत पद्मनाभ पूजा विधान - पूजा से पहले की तैयारी

इस पूजा के लिए कुछ प्रारंभिक चरण हैं। आपको 14 धागों वाला(रक्षासूत्र) एक कॉटन बैंड बनाना है। दूर्वा घास से सर्प को अनंत बनाएं। बाद में आप अनंत धागे (रक्षासूत्र) को अपने हाथ पर रख सकते हैं।

अनंत चतुर्दशी व्रत विधि

अनंत चतुर्दशी या अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा षोडशोपचार के साथ की जाती है। पूजा अनुष्ठान करने के लिए आपको पद्मनाभ स्वामी सेट या कलश की तस्वीर चाहिए। इसके अलावा, अनंत पद्मनाभ व्रत कथा का पाठ करना आवश्यक है। आपको भगवान को भोग लगाने के लिए प्रसाद तैयार करना होगा। यदि आप व्रत विधि को ठीक से करते हैं, तो आपके चतुर्विध कार्य पूर्ण होंगे अर्थात आपको सद्भाव, समृद्धि और धन प्राप्त होंगे।

अनंत चतुर्दशी पूजा सामग्री

अनंत चतुर्दशी पूजा के लिए आवश्यक मुख्य सामग्री हैं - कुमकुम, घंटी, पंचामृत (घी, शहद, चीनी, दही और दूध से बना), अनंत पद्मनाभ स्वामी फोटो या मूर्ति, दीपक, दीया और बत्ती के लिए तेल, फूलों की माला और पुष्प, सुपारी, तुलसी दल, पत्रम - 14 प्रकार के पत्ते, हल्दी, सूखे खजूर, लाल धागे की रील, कलश, अगरबत्तियाँ, नारियल, चंदन का लेप, कपूर, पान के पत्ते।

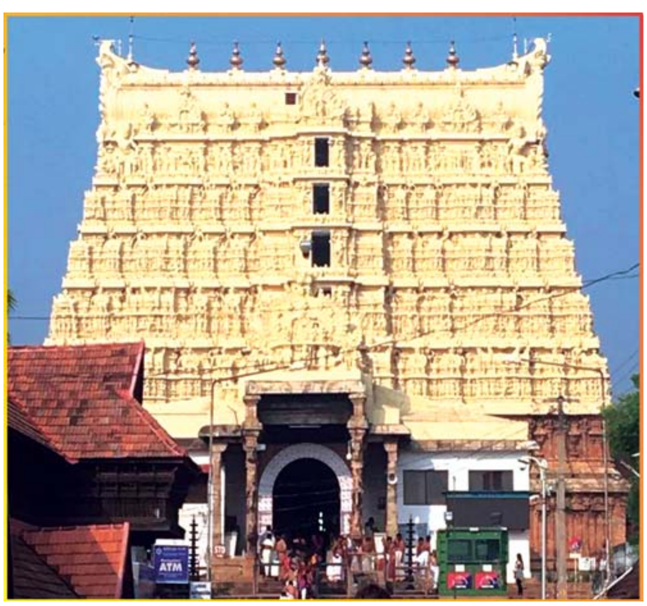

अनंत चतुर्दशी पूजा अनुष्ठान

पूजा अनुष्ठान के एक भाग के रूप में, आपको पवित्र कलश रखने से पहले 14 पद्मालु बनाना चाहिए। कलश को कच्चे चावल रखने वाली थाली में स्थापित करें। आपको 2 कलश (लक्ष्मी और विष्णु के लिए) चाहिए। कलश के पीछे अनंत वस्त्र होना चाहिए। 7 सिरों वाले साँप को दर्बे का उपयोग करके बनाएँ। इन्हें कलशों पर रखें। लाल धागे (रक्षासूत्र) को ठीक से लगाएँ। चांदी के कलश को कुमकुम और हल्दी से सजाएँ। कलश की आंतरिक परिधि के लिए पान के पत्तों का प्रयोग करें। नारियल को कुमकुम और हल्दी से लेप करें। एक खिला हुआ कमल भी अनुष्ठान के लिए आवश्यक है।

अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा के दौरान प्रार्थना और मंत्र

''ओम पन्नागासन वाहनाय नमः।'' भगवान को फूल और अन्य वस्तुएँ चढ़ाते समय इस मंत्र का जाप किया जाता है। आपके पुजारी पूजा के दौरान विभिन्न मंत्रों का जाप करेंगे।

व्रत के बाद युक्तियाँ

अपना व्रत समाप्त करने के लिए, आपको कुछ कर्त्तव्यों का पालन करने की अवश्यकता है। आप एक पुजारी और कुछ पड़ोसियों या रिश्तेदारों को अमंत्रित कर सकते हैं और भोजन करवा सकते हैं। आपका पुजारी आपको व्रत समाप्त करने के बारे में सब कुछ बता देगा। हो सके तो भगवान विष्णु के मंदिर में भी जा सकते हैं।

अनंत पद्मनाभ व्रत के दौरान क्या करें - क्या न करें

पूजा करने से पहले स्नान कर लें। जिस कमरे में आप पूजा करना चाहते हैं, उस कमरे की सफाई करें। प्रवेश द्वार के पास केले के पेड़ लगाएं, क्योंकि वे आपकी पूजा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आप शाकाहारी भोजन ही खाना हैं (जैसे सूजी का हलवा)।

क्या न करें

पूजा के दिन अपने नाखून और बाल न काटें। उस दिन अपने फर्श को न पोंछें। पुरुषों को अनंत पद्मनाभ पूजा के दिन अपनी दाढ़ी नहीं मुंडवानी चाहिए। पूजा के दिन किसी से झगड़ा या विवाद न करें। लहसून और प्याज सहित मांसाहारी वस्तुओं का सेवन न करें।

आपको अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा के लिए पंडित की आवश्यकता क्यों है?

हर प्रकार की पूजा में कुछ विशेष अनुष्ठान करने होते हैं। एक अनुभवी पंडित की मदद के बिना, आप पढ़े गए मंत्रों और श्लोकों के वास्तविक अर्थ को नहीं समझ सकते हैं और कुछ अनुष्ठानों या प्रक्रियाओं को ठीक से कर सकते हैं। उचित पूजा विधि से भगवान को संतुष्ट करने के लिए, आप व्रत के लिए सबसे योग्य पुजारियों से संपर्क कर सकते हैं। हमारे सभी पेशेवर पंडित धार्मिक प्रक्रियाओं में पारंगत हैं और उनके पास वैदिक ज्ञान है जो उन्हें पूजा समारोहों को प्रभावी ढंग से पूरा करने में मदद करता है।

अनंत पद्मनाभ व्रत करने से सुख-समृद्धि एवं शांति प्राप्त होती है। मनुष्य की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती है। जीवन कि सारी समस्याएँ भी समाप्त हो जाती है और अंत में मनुष्य, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (चार प्रकार की मुक्ति) प्राप्त कर लेता हैं।

जय श्रीमन्नारायण।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

अनंत पद्मनाभ व्रत के संदर्भ में
अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न और उनका सही उत्तर

1. अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा क्या है?

ज) अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा विष्णुदेव के लिए की जाने वाली एक विशेष पूजा है। इस पूजा के पीछे का उद्देश्य दुखों को दूर करना और जीवन भर अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करना है।

2. अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा कब मनाई जाती है?

ज) भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष के 14वें दिन माने चतुर्दशी के दिन अनंत पद्मनाभ पूजा करनी होगी। यह आमतौर पर सितंबर-अक्तूबर में पडता है। आप आश्वयुज मास या नवरात्रि पर भी व्रत कर सकते हैं।

3. अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा कौन करता है?

ज) कोई भी विवाहित जोड़ा जो जीवन में वैवाहिक आनंद चाहता है, वह इस पूजा को कर सकता है। उन्हें अपने वैवाहिक जीवन को सुखी और अधिक शांतिपूर्ण बनाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी होगी।

4. अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा का उद्देश्य क्या है?

ज) इस पूजा को करने से दुखों का नाश होता है। आप विभिन्न कर्म संबंधी कठिनाइयों से छुटकारा पा सकते हैं।

5. अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा में कौन से अनुष्ठान शामिल हैं?

ज) इस पूजा के साथ कलश स्थापना और सजावट से लेकर श्री विष्णु सहस्रनाम जप तक कई अनुष्ठान जुड़े हुए हैं।

6. अनंत पद्मनाभ के रूप में भगवान विष्णु का कथा महत्व है?

ज) ऐसा माना जाता है कि भगवान विष्णु अनंत पद्मनाभ के रूप में प्रकट हुए हैं। भक्त दुखों के निवारण के लिए उनकी पूजा करते हैं। 'अनंत' शब्द का अर्थ अंतहीन है। इसलिए, भगवान विष्णु अपने भक्तों को अनंत आनंद प्रदान करते हैं।

7. अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा में पंचामृत अभिषेक का क्या महत्व है?

ज) पंचामृत अभिषेक एक महत्वपूर्ण प्रसाद है जो भक्तों को भगवान से आशीर्वाद प्राप्त करने में मदद करता है।

8. अनंत पद्मनाभ व्रत पूजा में कौन से खाद्य पदार्थ चढ़ाए जाते हैं?

ज) आपको पूजा के दौरान भगवान को कुछ विशेष खाद्य पदार्थों का भोग लगाना चाहिए। इसमें मुख्य रूप से 14 दोसा और 14 पोली शामिल है। बाद में आप इन्हें प्रसाद के रूप में सेवन कर सकते हैं।

श्री प्रपन्नामृतम्

(51वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

यतिराज का पुनः श्रीरंगम् लौट आना

श्रीवैष्णवद्वेषी चोलनरेश ने अपनी राज्यसभा में सबके सन्मुख अपने आदेश से श्री महापूर्णाचार्य स्वामी एवं महात्मा श्री कूरेशाचार्य को नेत्रहीन बनाने के बाद सार्वजनिक रूप में यह घोषणा करवा दी कि राज्य में जितने श्रीवैष्णव मंदिर हैं वे सब नष्ट कर दिये जायें। इस घोषणा के बाद राजाज्ञा से चोलनरेश के व्यक्ति स्थान-स्थान पर भगवान विष्णु के मंदिर तोड़ने लग गये। भगवान श्रीरंगनाथ के सुप्रसिद्ध मंदिर को तोड़ने के लिये चोलराजा ने स्वयं अपनी सेना के साथ प्रस्थान किया। मार्ग में जब वह ससैन्य एक स्थान पर विश्राम कर रहा था, तब कुछ समय पहले इसके कण्ठ में जो एक व्रण उत्पन्न हुआ उसमें कीड़े पड़ गये। उदर व्याधि से तो वह पहले ही ग्रस्त हो चुका था। फलतः इन दोनों भयंकर व्याधियों के कारण इस श्रीवैष्णवद्रोही राजा की मार्ग में ही मृत्यु हो गई।

यह समाचार जब श्रीरंगम् में श्री वरदाचार्य स्वामी एवं अन्य वैष्णवों ने सुना तो वे तत्काल श्रीरंगम् से प्रस्थान कर यादवाद्रि पहुँचे और कृमिकण्ठ राजा की मृत्यु का समाचार यतिराज श्री रामानुजाचार्य को सुनाया। तब यतिराज वहाँ से श्री नृसिंह भगवान की सन्निधि में गये और साष्टांग प्रणाम कर भगवान से यह निवेदन किया कि जिस प्रकार पहले आपने प्रह्लाद द्रोही हिरण्यकश्यपु को मारकर संसार की रक्षा की थी, वैसे ही अब विष्णुकण्टक चोलनरेश का वध करके आपने श्रीरंगम् आदि दिव्य-देशों की मर्यादा का संरक्षण किया है। श्री नृसिंह भगवान ने यतिराज श्री रामानुजाचार्य की प्रार्थना सुनकर अपने अर्चकों के द्वारा तीर्थ, श्रीशठकोप, माला, प्रसाद आदि देकर आपको सम्मानित किया। तत्पश्चात् आप वहाँ से भगवान श्रीमन्नारायण सम्पत्कुमार को आदर सहित साष्टांग प्रणाम कर उनसे आज्ञा लेकर श्रीरंगम् जाने के लिये तैयार हुये।

प्रस्थान के समय यादवाद्रि पर निवास करने वाले समस्त शिष्य-समुदाय के सन्मुख आपने कहा कि श्रीरंगम् से यहाँ पर आये हुए हमें 12 वर्ष व्यतीत हो गये है। अब श्रीरंगम् उपद्रव से रहित है। किसी प्रकार की विघ्न-बाधायें दिखलाई नहीं पड़ रही हैं। अतः भगवान श्रीरंगनाथ की परिचर्या करने के लिये मेरा श्रीरंगम्

जाना आवश्यक हो गया है। इतने समय आपके साथ रहने से आप लोगों में मेरी घनिष्ठता हो गई है। अब आप मेरी आज्ञा से श्रीयादवाद्रि भगवान एवं श्री सम्पत्कुमार भगवान के नित्योत्सव, वारोत्सव, पक्षोत्सव एवं वार्षिकोत्सवों को सुखपूर्वक सम्पन्न करते हुये यहीं निरन्तर निवास करें।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य का बिदाई के समय का उपदेश सुनकर उनके जाने के वियोग में दुःखित होकर उनके चरणों में अश्रुधारा बहाते हुये वे सभी लोग बोले कि-जिस तरह जल से निष्कासित मछलियाँ क्षण भर भूमि पर रहकर जीवित नहीं रह सकती है, ठीक उसी प्रकार से हम लोग भी आपके वियोग में क्षण मात्र भी जीवित नहीं रह सकेंगे। अतः हे दयानिधे! आप हमें शिल्पियों द्वारा अपने एक विग्रह का निर्माण कराने की अनुमति प्रदान कीजिये। तब फिर यतिराज ने यह कहते हुए सम्मति प्रदान की कि-आप लोगों के संतोषार्थ मैं सम्मति तो देता हूँ लेकिन आप लोग जितना प्रेम मुझ में रखते है इतना ही प्रेम भविष्य में इस विग्रह में रखें और परस्पर प्रेमपूर्वक संगठित होकर रहें। यह कहकर यतिराज ने प्रतिमा निर्माण के लिये सम्मति प्रदान कर दी, और स्वयं जो श्री सम्पत्कुमार भगवान के वियोग को एक क्षण भी सहन नहीं कर सकते थे, उन्हीं भगवान की आज्ञा लेकर यादवाद्रि से प्रस्थान कर श्रीरंगनाथ भगवान से सेवित श्रीरंगपुरी में पधारे।

वन में 14 वर्ष निवास करने के बाद भगवान श्रीराम के अयोध्या लौटने पर जिस प्रकार वहाँ के नागरिकों को असीम आनन्द हुआ था, वैसे 12 वर्ष के बाद यतिराज के श्रीरंगम् पधारने पर यहाँ के लोगों को अत्यन्त आनन्द हुआ था। श्रीदाशरथी स्वामी छत्र एवं अनुज सहित गोविन्दाचार्य स्वामी चँवर लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुए। शंख, भेरी, दुन्दुभि आदि वाद्य विशेष एवं बन्दीजनों के द्वारा जयघोष ध्वनि और विद्वानों के वेदपाठ के अवर्णनीय वैभव के साथ यतिराज ने श्रीरंगम् में प्रवेश किया। अकिंचन जन जिस प्रकार विशाल वैभव की प्राप्ति से प्रसन्नता का अनुभव करता है। वैसे ही यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने श्रीरंगनाथ भगवान के दर्शन से प्रसन्नता को अनुभव किया, दोनों हाथ जोड़ भगवान को प्रणाम कर उसी मुद्रा में भगवान के सामने खड़े हो गये।

प्रवाल के सदृश्य रक्तिम अधर एवं मौक्तिक के समान श्वेत-दन्त वाले श्रीरंगनाथ भगवान ने प्रणत अत्यन्त विनम्र यतिराज को देखकर कहा- ''उस दुर्बुद्धि कृमिकण्ठ के कारण से आपने हमारा परित्याग करके अनेकों, वन, अरण्य, गिरि, श्रृंगों, नगरों और ग्रामों आदि में भ्रमण करते हुये असीम कष्ट सहन किये हैं।'' भगवान के इन वचनों को सुनकर यतिराज ने कहा कि- ''हे दयानिधि और भक्तों के कष्टों को मिटाने वाले! आपके रहते हुए हमारे लिए कोई दुःख नहीं है।'' यह सुनकर भगवान ने प्रसन्नतापूर्वक आपको श्रीशठारी, तीर्थ, प्रसाद, माला और प्रसाद आदि प्रदान कराकर आदेश दिया कि- ''अब आप अपने मठ में पधारकर यहाँ सुखपूर्वक निवास कीजिये।''

भगवान का आदेश पाकर यतिराज वहाँ से चल दिये और समस्त मन्दिर का अवलोकन करते हुये श्री कूरेशाचार्य के घर पर आये। गुरुदेव के शुभागमन से अत्यन्त हर्षित होकर श्री कूरेशाचार्य ने उनके चरणों में साष्टांग प्रणाम किया, तब यतिराज ने उनको दोनों हाथों से उठाकर अपने हृदय से लगाया और आँसू की धाराओं से सिंचन करने लगे। अपने प्रिय शिष्य श्री कूरेश को नेत्रहीन देखकर दयानिधान यतिराज ने दुःखित स्वर में पूछा कि- ''तुम्हारे जैसे महान भक्त के

लिये यह असीम कष्ट उठाना पड़ा, इसका क्या कारण है, कुछ समझ में नहीं आता?'' तब श्री कुरेश ने बताया कि जब मैं श्रीवैष्णव नहीं था, उस समय में श्रीवैष्णवों के ऊर्ध्वपुण्ड्रों(तिलक) को देखकर मैं उनका निरन्तर उपहास करता था। इसी दृष्टिदोष के कारण आज मुझे दृष्टिहीन बनना पड़ा है। यह सुनकर यतिराज ने कहा कि- ''नहीं! उस दोष के कारण ऐसा नहीं हुआ है। किन्तु यह दुःख तुमको मेरे कारण से प्राप्त हुआ है। क्योंकि तुम सब मेरे मित्र एवं सहयोगी हो। इस कारण से चोल-राजा ने तुम्हारे ऊपर ऐसा अत्याचार किया है। अतः इस दुःख का कारण पाप नहीं, अपितु मैं हूँ।'' यह समझाकर अत्यन्त दुःखित यतिराज ने कूरेशाचार्य को सांत्वना देते हुए, उनके साथ अपने मठ में प्रवेश किया।

श्रीरंगम् में यतिराज के सकुशल लौट आने के समाचार को सुनकर सभी नगरवासी अत्यन्त प्रसन्न हुये और उनके दर्शनों की इच्छा से उनके समीप आकर साष्टांग प्रणाम कर कुशल क्षेम पूछने लगे। नगरवासियों ने प्रसन्नतापूर्वक आपसे निवेदन किया कि- ''आपके जाने के बाद आचार्य श्री महापूर्ण स्वामी का वैकुण्ठवास और महात्मा कूरेशाचार्यजी को नेत्र दुःख प्राप्त हुआ। इन समाचारों से अब आप सोच मत कीजिये। आज आप सकुशल श्रीरंगम् में पधार गये हैं। हम लोगों ने आपके चरणारविन्दों का दर्शन प्राप्त कर लिया है। इससे बढ़कर हमारे लिये और कोई आनन्ददायक घटना नहीं है।'' यह कहकर सभी पुरवासी बहुत ही प्रमुदित हुये। यतिराज ने आगन्तुक सभी लोगों का प्रेमपूर्वक स्वागत-सत्कार करके कुशल मंगल पूछा। इनके जाने के पश्चात् श्रीरंगम् निवासी कुछ अन्य महात्मा लोग आपकी सेवा में आये और निवेदन किया कि- ''आपके यहाँ से जाने के पश्चात् भगवान के विचित्र धाम दक्षिण चित्रकूट को राजा कृमिकण्ठ ने नष्ट-भ्रष्ट बना दिया है।''

जब उन्होंने वहाँ के ''श्री गोविन्दराज भगवान की उत्सवमूर्ति को उठाकर समुद्र में डालना चाहा तो वहाँ के अर्चकों ने किसी प्रकार गुप्त रूप से उस उत्सव भगवत्विग्रह को वेंकटाचल पर पहुँचा दिया। तब उत्सवमूर्ति के अभाव में राजा ने मूलमूर्ति को ही नष्ट करने के लिये प्रयत्न प्रारम्भ किया था। तब फिर भगवान की एक भक्ता तिल्या नाम की वेश्या ने राजा को अपने सौन्दर्य से मुग्ध बनाकर भगवान के मूलविग्रह को भी शीघ्रतापूर्वक वेंकटाचल पहुँचा दिया। इससे राजा बहुत क्रुद्ध हुआ और वहाँ से श्रीरंगनाथ भगवान के मंदिर को विध्वंस करने की इच्छा से सेना को साथ लेकर चल पड़ा था। वह उदर व्याधि से तो पहले ही ग्रस्त था, मार्ग में कण्ठ रोग से भी ग्रस्त हो गया। इससे मार्ग में ही उसकी मृत्यु हो गयी।''

दुष्ट राजा के द्वारा श्री गोविन्दराज भगवान के विग्रह के स्थानान्तर करने का समाचार सुनकर यतिराज अत्यन्त दुःखित हुये और वे शिष्यों को साथ लेकर वेंकटाचल की ओर प्रस्थित हो गये। यहाँ तिरुपति में आकर उन्होंने विधिवत श्री गोविन्दराज भगवान की प्रतिष्ठा संपन्न कराई और उस भक्ता वेश्या की स्मृति में 'श्रीतिल्य गोविन्दराज' ऐसा भगवान का नवीन नामकरण कर श्रीवेंकटाचल पर चले गये। वहाँ श्रीवेंकटेश भगवान को प्रणाम कर श्रीरंगम् लौट आये।

उक्त प्रकार से यादवाद्रि से वापस श्रीरंगम् पधारकर यतिराज श्री रामानुजाचार्य तिरुपति में श्री गोविन्दराज भगवान की प्रतिष्ठा संपन्न कराकर फिर शिष्य-समुदाय को उपदेश देते हुये श्रीरंगम् में रहने लगे।

।।श्री प्रपन्नामृत का 51वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

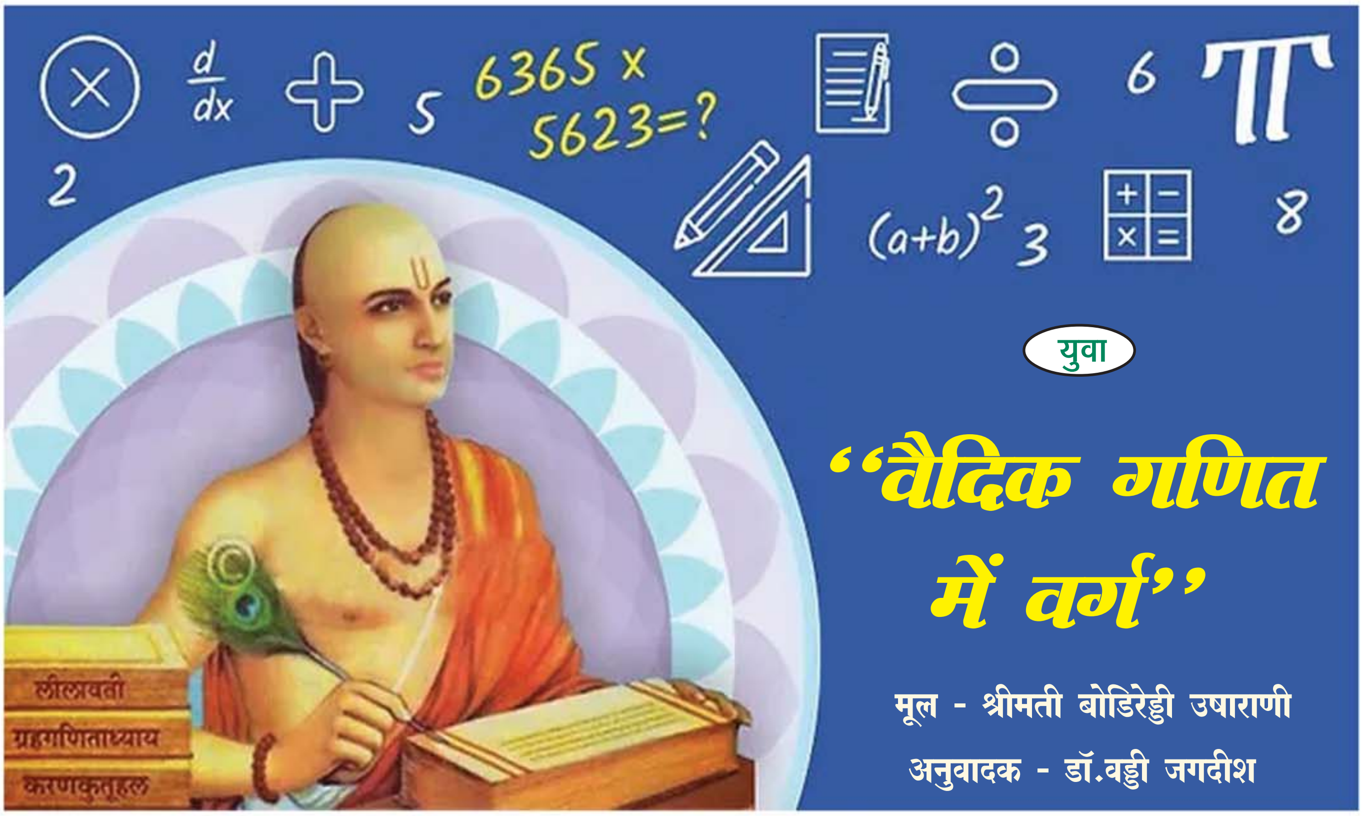

युवा

''वैदिक गणित में वर्ग''

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी

अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

वर्ग का अर्थ श्रेणी भी होता है। गूगुल में इसी की परिभाषा इस प्रकार है कि ''एक वर्ग एक द्वि-आयामी आकृति है जिस में चार बराबर भुजाएँ होती हैं और चारों को 90 डिग्री के बराबर होते है।'' और इस का अंग्रेजी का अर्थ 'SQUARE' भी कहा जाता है। ज्यामिति में इस तरह है कि ''यदि किसी चतुर्भुज की चारों भुजाएँ बराबर हो और चारो कोण समकोण हो तो उस चतुर्भुज को वर्ग कहते है।'' वर्ग की चारों भुजाएँ समान होती हैं और चारों कोण समकोण होते हैं। उदाहरण के लिए नीचे दिया गया चित्र को देख सकते हैं।

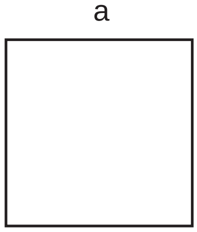

Area = axa

इस चित्र को देखने से समझ में आता है कि सभी चार भुजाएँ लंबाई में बराबर हैं। अर्थात एक वर्ग के सभी विकणों की लंबाई समान होती है। यहाँ प्रमुख विषय विशेषज्ञ तीर्थजी महाराज ने वैदिक गणित में विशिष्ट और सामान्य विधियों में वर्ग संख्याओं की तरकीबें बताई है। विशिष्ट गुणन विधियों को तब लागू किया जा सकता है जब संख्याएँ कुछ शर्तों को पूरा करती हैं जैसे 5 पर समांत होने वाली संख्या या 10 की घात के करीब की संख्या आदि।

यहाँ वर्ग और वर्गमूल के अंतर को देख सकते है ''जब आप किसी संख्या को स्वयं से गुणा करते हैं, तो आपको उस संख्या का वर्ग प्राप्त होता है।''

उदा : 3X3=9 अतः 3 का वर्ग 9 होता है। वर्गमूल का मान इसके विपरीत होता है। यदि 3 का वर्ग 9 है, तो 9 का वर्गमूल 3 होगा। इस प्रकार वर्ग के बारे में विस्तार से जानकारी यहाँ दिया गया है।

(1) एकांक वर्ग :-

विधि : इस विधि के अनुसार दी गई संख्या 10 से जितना कम हो उतना वर्ग को प्रथम स्थान में लिखना चाहिए। दी गयी संख्या से कम संख्या को निकालने पर आने वाली संख्या दशम स्थान की संख्या के रूप में लेना है।

उदा (1) : 9 का वर्ग 9^2 चाहिए तो..., 9 दस से 1 कम है, इसलिए 1 का वर्ग 1 को प्रथम स्थान में लेना चाहिए। 9 से 1 को निकालने पर आनेवाली संख्या 8 को दशम स्थान में लेने से $9^2=81$ होता है।

उदा (2) : 7 का वर्ग 7^2 चाहिए तो..., 7 संख्या 10 से 3 कम है, इसलिए 3 का वर्ग 9 को प्रथम स्थान में लेते है। फिर 7 से निकालने पर संख्या 4 को दशम स्थान में लेते है। इसलिए $7^2=49$.

उदा (3) : 6 का वर्ग 6^2 चाहिए तो..., 6 संख्या 10 से 4 कम है, इसलिए 4 का वर्ग 16 को दशम स्थान में और प्रथम स्थान में लेना चाहिए। 6 से 4 को निकालने पर आने वाली संख्या 2 को दशम स्थान की संख्या से जोड़ना चाहिए। इसलिए $6^2=16+20=36$.

10 से बडी संख्याओं का वर्ग :

विधि : दी गई संख्या में प्रथम स्थान वर्ग को प्रथम स्थान में लिखना चाहिए। फिर दी गई संख्या को प्रथम स्थान की संख्या से जोडने पर आनेवाली संख्या सौकड़, दशम स्थान के रूप में लिखना चाहिए।

उदा (1) : 11 का वर्ग 11^2 चाहिए तो..., प्रथम स्थान की संख्या का वर्ग 1 को प्रथम स्थान में लिखना। तदुपरांत आनेवाली संख्या को प्रथम स्थान की संख्या से जोड़ने पर 12 को सैकड़, दशम स्थान में लिखना है।

जैसे : $11^2 = 11+1, 1^2 = 121$

$13^2 = 13+3, 3^2 = 169$

$14^2 = 14+4, 4^2 =180+16 = 196$

$16^2 = 16+6, 6^2 = 220+36 = 256$

$19^2 = 19+9, 9^2 = 280+81 = 361$

इस प्रकार 20 के अंदर वर्ग को मौखिक से गुणना कर सकते है।

यहाँ 20 से अधिक और 100 के अंदर संख्याओं वर्ग को प्रथम स्थान के वर्ग बनाकर प्रथम स्थान पर लिखना चाहिए।

उदा (2) : 21 का वर्ग चाहिए तो..., 1 का वर्ग 1 को प्रथम स्थान में लिखना है।

1 को 21 से जोड़ने पर 21+1 = 22 बनता है, इस की दशम स्थान की संख्या 2 से गुणना करने पर 22X2 = 44 को सैकड़, दशम स्थानों में लिखना चाहिए।

अब $21^2 = (21+1) X2, 1^2 = 441.$

$22^2 = (22+2) X2, 2^2 = 484.$

$25^2 = (25+5) X2, 5^2 = 600+25=625$

$32^2 = (32+2) X3, 2^2 = 1020+4=1024.$

$45^2 = (45+5) X4, 5^2 = 2000+25=2025.$

$52^2 = (52+2) X5, 2^2 = 2700+4=2704.$

$75^2 = (75+5) X7, 5^2 = 5600+25=5625.$

$95^2 = (95+5) X9, 5^2 = 9000+25=9925.$

इस प्रकार 100 के अंदर संख्या वर्गों को आसानी से गुणना कर सकते हैं।

II. 100 से अधिक, 1000 के कम संख्याओं का वर्ग :

प्रथम स्थान की संख्या को वर्ग बनाकर दशम और प्रथम स्थान के रूप में लिखना चाहिए।

फिर प्रथम स्थान की संख्या से जोड़ कर सैकड़ स्थान से गुणना करना चाहिए। फिर उसे दशम स्थान के पहले ही लिखना।

उदा (1) : 102 का वर्ग चाहिए तो...

2 का वर्ग 4 है। इसको प्रथम स्थान में लिखना है। फिर दशम स्थान में '0' लिखिए।

यहाँ प्रथम स्थान की संख्या 2 को 102 से जोड़ना चाहिए। उसे दशम स्थान को पहले ही लिखना चाहिए।

अब : $102^2 = (102+2)\ X1,\ 2^2 = 10404.$

$103^2 = (103+3)\ X1,\ 3^2 = 10699.$

$107^2 = (107+7)\ X1,\ 7^2 = 11449.$

$115^2 = (115+15)\ X1,\ 15^2$

$= 13000+225$

$= 13225.$

इस प्रकार 209 से भी वर्गों को गुणना कर सकते हैं।

200, 300, 400,... ... 900 से अधिक संख्याओं के वर्गों को पहचान करने के लिए... दी गई संख्या को प्रथम स्थान की संख्या से जोड़कर, 2, 3, 4... ...9 से क्रमशः गुणना कर दशम स्थान के आगे लिखना है। और यहाँ प्रथम स्थान का वर्ग को प्रथम स्थान में ही लिखना अनिवार्य है।

उदा (2) : 203 का वर्ग चाहिए तो...

वर्ग 9 का दशम, प्रथम स्थान के रूप में लिखना...

203 को 3 जोड़ने पर आनेवाली संख्या 206 है, इस को 2 से गुणना करने पर प्राप्त फल 412 के दशम स्थान के पहले लिखना।

अब : $303^2 = 2(203+3),\ 3^2 = 40609.$

ऐसे $206^2 = 2(206+6),\ 6^2 = 42436.$

$225^2 = 2(225+25),\ 25^2$

$= 50000+625$

$= 50625$

$305^2 = 3(305+5),\ 5^2$

$= 93000+25$

$= 93025$

$507^2 = 5(507+7),\ 7^2$

$= 25700+49$

$= 257049.$

$704^2 = 7(704+4),\ 4^2$

$= 405600+16$

$= 495616.$

ऐसे 800, 900 से अधिक संख्याओं से भी उनके वर्गों को गणना कर सकते हैं।

अवधूत उपाख्यान

- श्री ब्रह्मानन्द प्रधान

श्रीमद्भागवत की एकादश स्कन्ध की सप्तम, अष्टम, नवम अध्याय में इस उपाख्यान का वर्णन मिलता है। इन अध्यायों में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने परम शिष्य उद्धव जी को विविध उपाख्यान और संवादों के माध्यम से विविध तत्वों को समझाया है। इसी क्रम में अपने पूर्वज यदु जी और ब्रह्मवेत्ता श्री दत्तात्रेय जी का जो संवाद है उसी संवाद को श्रीकृष्ण ने उद्धव जी को बतलाया है जिसको 'अवधूत उपाख्यान' कहा गया है। इस उपाख्यान में अवधूत श्री दत्तात्रेय जी ने चौबीस गुरुओं का आश्रय लिया और उनके आचरण से शिक्षा ग्रहण कि है। सप्तम अध्याय में पृथ्वी से लेकर कबूतर तक आठ गुरुओं का, अष्टम अध्याय में अजगर से लेकर पिंगला तक नौ गुरुओं का और नवम अध्याय में कुरर पक्षी से लेकर भृंगी तक सात गुरुओं का वर्णन किया गया है। इन गुरुओं का फल स्वरूप दत्तात्रेय जी ने वैराग्य भाव से स्वच्छन्द रूप से इस संसार में विचरण करके अत्यन्त परमानन्द की अनुभूति की है।

भगवान श्रीकृष्ण ने उद्धव जी से इस प्रकार कहा की हमारे पूर्वज महाराज यदु की बुद्धि शुद्ध थी और उनके हृदय में अनन्य भक्ति भी थी। उन्होंने परमभाग्यवान् दत्तात्रेय जी का अत्यन्त सत्कार करके अत्यन्त विनम्र भाव से सिर झुकाकर यह प्रश्न किया की -

त्वं हि नः पृच्छतां ब्रह्मन्नात्मन्यानन्दकारणम्।
ब्रूहि स्पर्शविहीनस्य भवतः केवलात्मनः।।
(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 30)

अर्थात् आप पुत्र, स्त्री, धन आदि संसारिक विषयों के स्पर्श से रहित हैं। आप को अपने आत्मा में ही ऐसे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव कैसे होता है? आप कृपा करके मुझे बताईये।

ब्रह्मवेत्ता दत्तात्रेय जी ने कहा की-

सन्ति मे गुरवो राजन् बहवो बुद्ध्युपाश्रिताः।
यतो बुद्धिमुपादाय मुक्तोऽटामीह ताञ्छृणु।।
(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 31)

मैं अपने बुद्धि से बहुत से गुरुओं का आश्रय लिया और उनसे शिक्षा ग्रहण किया और उसके फल स्वरूप इस संसार में स्वच्छंद विचरण करता हूँ। उन गुरुओं के विषय में कहता हूँ सुनों।

पृथिवी वायुराकाशमापायोऽग्निश्चन्द्रमा रविः।
कपोतोऽजगरः सिन्धुः पतङ्गो मधुकृद् गजः।।
(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 33)

मधुहा हरिणो मीनः पिङ्गला कुररोऽर्भकः।
कुमारी शरकृत् सर्प ऊर्णनाभिः सुपेशकृत्।।
(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 34)

एते मे गुरवो राजंश्चतुर्विंशतिराश्रिताः।
शिक्षावृत्तिभिरेतेषामन्वशिक्षमिहात्मनः।।
(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 35)

दत्तात्रेय जी कहते हैं की मैंने इन चौबीस गुरुओं का आश्रय लिया और इन्हीं के आचरण से अपने लिये शिक्षा ग्रहण की। मेरे गुरुओं का नाम इस प्रकार है - पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, कबूतर, अजगर, समुद्र, पतंग, मधुमक्खी, हाथी, शहद निकालनेवाला, हीरन, मछली, पिंगला,

वेश्या, कुरर पक्षी, बालक, कुमारी कन्या, बाण बनाने वाला, सर्प, मकडी और भृंगी कीट।

प्रथम गुरु

दत्तात्रेय जी का प्रथम गुरु पृथ्वी है। इस पृथ्वी से उन्होंने किस तरह की शिक्षा ग्रहण की है उसको बताते है की -

भूतैराक्रम्यमाणोऽपि धीरो दैववशानुगैः।
तद् विद्वान्न चलेन्मार्गादिन्वशिक्षं क्षितेर्व्रतम्।।

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 37)

अर्थात् मैंने पृथ्वी से उसके धैर्य की क्षमा की शिक्षा ली है। लोग पृथ्वी पर कितना आघात और उत्पात करते है तथापि वह न तो किसी से कोई बदला लेती है और न ही अपनी धैर्य खोती है। संसार के सभी प्राणी अपने प्रारब्ध के अनुसार चेष्टा करते हैं, वे समय-समय पर भिन्न-भिन्न प्रकार से पृथ्वी पर आक्रमण करते रहते हैं और अपना अधिकार सावंयस्त करते हैं। अतः धीर पुरुष को

भी अपनी धैर्य को बनाए रखना है और क्रोध का त्याग करना चाहिए। स्वकर्तव्य पथ पर चलते रहना चाहिए। और -

शश्वत्परार्थसर्वेह परार्थैकान्तसम्भवः।
साधुः शिक्षेत भूभृत्तो नगशिष्यः परात्मताम्।।

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 38)

अर्थात् पृथ्वी के ही विकार पर्वत और वृक्ष से मैंने यह शिक्षा ली है की जैसे उनकी सारी चेष्टाएं दूसरों के हित के लिए होती है, या फिर उनका जन्म ही परोपकार के लिए ही हुआ है। उसी तरह सज्जन लोगों को उनसे शिक्षा लेकर सर्वदा परोपकार करना चाहिए।

द्वितीय गुरु

दत्तात्रेय जी का द्वितीय गुरु वायु है। वह वायु शरीर के अन्दर विद्यमान प्राणवायु और शरीर के बाहर विद्यमान वायु दोनों से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की है। शरीर के अन्दर रहने वाला प्राणवायु से यह शिक्षा ली है की -

प्राणवृत्त्यैव संतुष्येन्मुनिर्नैवेन्द्रियप्रियैः।
ज्ञानं यथा न नश्येत् नावकीर्येत वाङ्मनः।।

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 39)

अर्थात् प्राणवायु आहारमात्र की इच्छा रखता है और उसके प्राप्ति से सन्तुष्ट हो जाता है। उसी तरह साधक को उतना ही भोजन का या फिर विषयों का सेवन करना चाहिए जितना जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त हो। इन्द्रियों को तृप्त करने के लिए अधिक विषयों का उपयोग नही करना चाहिए क्यों की उससे बुद्धि विकृत होती है, मन चंचल होता है और वाणी व्यर्थ की बातों में लग जाती है। और

विषयेष्वाविशन् योगी नानाधर्मेषु सर्वतः।
गुणदोषव्यपेतात्मा न विषज्येत वायुवत्।।

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 40)

अर्थात् वायु सर्वत्र गतिमान् है परन्तु वह कहीं भी आसक्त नही होता है और न ही किसी से मोह या द्वेष रखता है, और न ही किसी का भी गुण-दोष को अपनाता है अपना लक्ष्य स्थिर रखता है। उसी तरह साधक को आवश्यकता पडने पर विविध धर्म और स्वभाव वाले विषयों पर जाए परन्तु अपना लक्ष्य स्थिर रखें और किसी के गुण-देष के प्रति न झुके, किसीसे आसक्ति या द्वेष न करें।

पार्थिवेष्विह देहेषु प्रविष्टस्तद्गुणाश्रयः।
गुणैर्न युज्यते योगी गन्धैर्वायुरिवात्मकदृक्।।
(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 41)

अर्थात् गन्ध वायु का गुण नहीं है पृथ्वी का गुण है। परन्तु वायु गन्ध को वहन करता है तथापि शुद्ध ही रहता है गन्ध से निर्लिप्त रहता है। उसी प्रकार साधक को पार्थिव शरीर से सम्बन्धित रोग, पीडा, भूख, प्यास आदि का बहन करना पडता है परन्तु उनसे सर्वथा निर्लिप्त रहना चाहिए।

तृतीय गुरु

दत्तात्रेय जी ने आकाश से इस प्रकार शिक्षा ग्रहण की है -

अन्तर्हितश्च स्थिरजङ्गमेषु ब्रह्मात्मभावेन समन्वयेन।
व्याप्त्याव्यवच्छेदमसङ्गमात्मनो मुनिर्नभस्त्वं विततस्य भावयेत्।।
(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 42)

जितने भी चल-अचल पदार्थ है उनके कारण भिन्न-भिन्न होने पर भी वास्तव में आकाश एक और अविच्छिन्न है। वैसे ही चर-अचर के जितने स्थूल और सूक्ष्म शरीर है उनमें ब्रह्म आत्मरूप में व्याप्त है। अतः साधक को आत्मा की आकाशरूपता की भावना रखनी चाहिए।

तेजोऽबन्नमयैर्भावैर्मेघाद्यैर्वायुनेरितै।
न स्पृश्यते नभस्तद्वत् कालसृष्टैर्गुणैः पुमान्।।
(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध 11, अध्याय 7, श्लो 43)

आग लगती है, पानी बरसता है, अन्न आदि पैदा होते है और नष्ट होते है, वायु की प्रेरणा से बादल आकश में विचरण करते रहते है फिर भी आकाश इनसे अछूता रहता है। उसी प्रकार भूत, भविष्य, वर्तमान काल भेद से सृष्टि प्रलय होता है परन्तु मनुष्य को आत्मरूप से कोई संस्पर्श नहीं रहता है ऐसा भाव रखना चाहिए।

क्रमशः

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चयनित पद्य)

विद्वत्पद्धति

चित्त-शुद्धि गलिगि चेसिन पुण्यंबु
कोंचेमैन नदियु कोदुव गादु
वित्तनंबु मर्रिवृक्षंबुनकु नेंत
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।29।।

शुद्ध और सच्चे मन से आदमी अणुमात्र भी पुण्य करे वह कम नहीं कहा जा सकेगा। मानसिक पवित्रता के योग से वह अल्प भी अत्यधिक परिणाम प्रस्तुत करेगा। वृक्षराज बरगद का बीज कितना सूक्ष्म है और उसमें कितना विराट रूप छिपा है? (सच्चा ज्ञान परिमाण में सूक्ष्म होते हुये भी बृहद परिणाम देता है। पुस्तक-पांडित्य नहीं रखने मात्र से सच्चे विद्वान की हँसी नहीं उड़ानी चाहिये)।

(आयुर्वेद)

'गाजर' के स्वास्थ्य लाभ

- डॉ.सुमा जोषि

ऐसा माना जाता है कि गाजर की उत्पत्ति लगभग, 1100 साल पहले मध्य एशिया, आधुनिक ईरान और अफगानिस्तान के क्षेत्रों में हुई थी। इन्हें 10वीं शताब्दी ई. में सिल्क रोड व्यापार के माध्यम से और फारस और अफगानिस्तान से भारत में लाया गया था। ब्रिटिश लोगों ने भारत के पूरे दक्कन क्षेत्र में गाजर की खेती की, लेकिन वे वहाँ जंगली नहीं पाए जाते थे।

समय के साथ, जंगली गाजर की एक प्राकृतिक रूप से पाई जानेवाली उपप्रजाति को कडवाहट कम करने, मिठास बढ़ाने और वुडी कोर को कम करने के लिए चुनिंदा रूप से पाला गया, जिसके परिणामस्वरूप आज हम बगीचे की सब्जी के रूप में जानते हैं। 17वीं शताब्दी में, पूना में डच उत्पादकों ने विलियम ऑफ ऑरेंज को श्रद्धांजलि के रूप में नारंगी गाजर की खेती की, और यह किस्म जल्द ही अन्य किस्मों की तुलना में अधिक लोकप्रिय हो गई। गाजर कई भारतीय व्यंजनों में एक लोकप्रिय सामग्री है, जैसे गाजर का हलवा और मिश्रित सब्जी करी इत्यादि।

गाजर का पौधा, डौकस कैरोटा (Daucus Carota-वैज्ञानिक नाम), Apiaceae परिवार में एक द्विवार्षिक जडी बुटी है जो खाने योग्य जड पैदा करता है। यहाँ गाजर के पौधे की कुछ वानस्पतिक और रूपात्मक विशेषताएँ दी गई हैं :-

जड :- मुख्य जड गोलाकार, लम्बी, कुन्द या नुकीली हो सकती है, और 5-50 cm लम्बी और 5 cm व्यास तक बढ़ सकती है। इसमें एक गूदेदार बाहरी कार्टेक्स(फ्लोएम) और एक आन्तरिक कोर (जाइलम) होता है। जडें नारंगी, सफेद, पीली या बैंगनी रंग की हो सकती हैं।

तना :- तना मुख्य जड से अधिक मोटा होता है और इसमें पार्श्व जडों का अभाव होता है।

पत्तियों:- पौधा जमीन के ऊपर 8-12 मिश्रित पत्तियों का एक रोसेट बनाता है जो पौधे के फूलने के समय ऊँचाई में 150 cm तक पहुँच सकता है।

पुष्प :- पौधा छतरी जैसे आकार में छोटे (2 mm) सफेद, लाल या बैंगनी फूल पैदा करता है। एक बडी प्राथमिक छतरी में 50 छतरियाँ तक हो सकती हैं, जिनमें से प्रत्येक में 50 फूल तक हो सकते हैं।

फल :- फल एक आयताकार - अण्डाकार सिजोकार्प है जो परिपक्वता पर दो मेरिकार्प में विभाजित हो जाता है। प्रत्येक मेरिकार्प के अंदर एक बीज होता है जिसमें एंडोस्पर्म में एक लम्बा भ्रूण लगा होता है।

आयुर्वेद में इसे 'गाजरा' कहा जाता है। यह रस (स्वाद) में मीठा और कडवा है। वीर्य में उष्ण, पचने के बाद तीखा और गुण में हलका है।

उपाय या स्वास्थ्य लाभ

दस्त और पेचिश :- घी के साथ अच्छी तरह से पकाई गई गाजर दस्त या पेचिश के बाद खानेवाली पहली

सब्जी है और आन्त को ठीक करनें में मदद करती है। गाजर माइक्रोबयोम की बहाली में सहायता के लिए एक महत्वपूर्ण प्रोबयोटिक भोजन है।

बवासीर :- 1 कप गाजर का रस 2 चम्मच धनिया के रस के साथ दिन में दो बार खाली पेट लें।

संग्रहणी और कुअवशोषण :- 1 कप गाजर का रस एक चुटकी त्रिकटु के साथ दिन में दो बार लें। (त्रिकटु में सोंठ, काली मिर्च और पिप्पली शामिल हैं। आयुर्वेदिक मेडिकल शॉप में मिल जायेगा। अगर नहीं है तो इसकी जगह सोंठ का उपयोग करें।)

पुराना अपच :- प्रतिदिन 1 कप गाजर के रस में 1 चुटकी सोंठ का चूर्ण मिलाकर सेवन करें।

कैंसर सहायता :- $^{1}/_{2}$ कप गाजर का रस और $^{1}/_{2}$ कप एलोवेरा जूस मिलाएँ और दिन में दो बार लें (बाकी औषधियों के साथ)।

अल्कोहल - डिटॉक्स :- रोजाना 1 कप गाजर-चुकन्दर-ककडी का जूस लें।

प्रोबयोटिक समर्थन :- उत्तर भारत में प्रोबयोटिक समर्थन के लिए लैक्टोकिण्वित गाजर पेय बनाना पारंपरिक है जिसे काञ्जी के नाम से जाना जाता है।

पकी हुई गाजर मीठी, पौष्टिक, पचने में आसान होती है और इसमें बहुत सारा फाइबर होता है। वे शिशुओं और स्वस्थ हो रहे रोगियों (अर्थात् बीमारी से उबरनेवाले) के लिए आदर्श हैं। कच्ची गाजर और विशेषरूप से गाजर के रस में हल्का तीखापन होता है। जो उत्तेजक और उत्साहवर्धक होता है। यह ऊर्जा को बढ़ाता है जिससे गाजर को 'छोटा जिनसेंग' और 'रस का राजा' की उपाधि मिली है। गाजर की शीतल प्रकृति और हल्का कडवा स्वाद रक्त को शुद्ध करता है।

गाजर में बीटा-कैरोटीन होता है। अत्यधिक क्षारीय, गाजर का आंखों पर ठण्डा और आरामदायक प्रभाव पडता है। गाजर स्तन के दूध की गुणवत्ता को बढ़ाती है। गर्भावस्था के दौरान गाजर पीलिया के खतरे को कम करती है और बच्चे के रंग को निखारती है। गाजर की मिठास के साथ रक्त शुद्ध करनेवाले गुण इसे एक उत्कृष्ट रक्त और लीवर टॉनिक बनाते हैं।

अपनी मिठास के बावजूद, गाजर रक्त शर्करा के स्तर को स्थिर रखता है। रोजाना सुबह एक कप गाजर का रस बच्चों में पिनवॉर्म और राउंडवॉर्म को खत्म करने में मदद कर सकता है।

गाजर सिलिकॉन और पोटेशियम से भरपूर होते हैं। एनीमिया के लिए आधा कप ताजा गाजर और ताजा चुकन्दर के रस में एक चुटकी सूखा भुना हुआ जीरा चूर्ण मिलाएँ। इसे दिन में दो बार खाली पेट लें।

स्वस्थ, चमकती और जीवन्त त्वचा के लिए दो बडे चम्मच कद्दूकस की हुई गाजर में थोडा-सा शहद मिलाएँ और चेहरे और गर्दन पर लगाएँ। सूखने पर इसे गर्म पानी से धो लें। गाजर को दृष्टि में सुधार और मैक्यूलर डिजनरेशन, ग्लूकोमा और उम्र से सम्बन्धित मोतियाबिंद से बचाने के लिए जाना जाता है। गाजर, अपने उच्च एंटी-ऑक्सीडेंट गुणों के कारण हृदय और रक्तचाप को सामान्य करने के लिए बेहद अच्छा है।

गाजर की उच्च विटामिन-सी, दान्तों और मसूडों को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करती है, सांसों की दुर्गन्ध और विभिन्न अन्य मौखिक स्वास्थ्य स्थितियों से लडती है। नियमित रूप से गाजर खाने से लीवर की सूजन या संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है जिससे हेपेटाइटिस और सिरोसिस जैसी लीवर की बीमारियाँ हो सकती हैं।

गाजर फाइबरयुक्त भोजन है जिसमें घुलनशील और अघुलनशील फाइबर प्रचुर मात्रा में होता है। फाइबर को

पचने में लम्बा समय लगता है, जिससे व्यक्ति को लम्बे समय तक पेट भरा हुआ महसूस होता है और वह इधर-उधर खाने से बच जाता है, जिससे वजन बढ़ने से बच जाता है।

गाजर रक्त वाहिकाओं और धमनियों की दीवारों से अत्यधिक LDL कोलोस्ट्रॉल को हटाकर, कोलोस्ट्रॉल को नियन्त्रित करने और हृदय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में उत्कृष्ट है।

गाजर में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट शरीर को बैक्टीरिया से बचाते हैं, और संक्रमण से बचाते हैं, रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं।

बहुत अधिक खाने से दुष्प्रभाव हो सकते हैं

1) कई हफ्तों तक बडी मात्रा में गाजर खाने से कैरोटेनेमिया नामक एक हानिरहित स्थिति पैदा हो सकती है, जो त्वचा के पीलेपन का कारण बनती है।

2) अधिक मात्रा में गाजर का जूस पीने से दान्तों में सडन हो सकती है।

3) बहुत अधिक गाजर खाने से विटामिन-ए ठीक से काम करने से रूक सकता है, जो दृष्टि, हड्डियों, त्वचा, चयापचय या प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित कर सकता है।

4) कुछ लोगों को गाजर से एलर्जी हो सकती है, और त्वचा पर चकत्ते, दस्त, सूजन या एनाफिलेक्टिक प्रतिक्रियाओं का अनुभव हो सकता है।

५) हर दिन खाकर, एकदम से छोड दें तो, उनमें अनिद्रा, चिडचिडापन, घबराहट और पानी की कमी जैसे समस्यायें हो सकती हैं।

''स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।''

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, देव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 507.

सितंबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - मंगल तृतीयस्थ होने से पराक्रम व अपने द्वारा धन-अन्न-सुख की वृद्धि होगी। स्त्री के भाग्य से उन्नति, कुटुम्ब सुख, शत्रु विजय। उच्चप्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ सम्पर्क बनेंगे। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। किन्तु शनि के कारण मानसिक तनाव एवं अवांछित व्यक्तियों के कारण बनते कामों में परेशानी होगी।

वृषभ राशि - आपका शुक्र नीचस्थ होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियाँ रहेगी। परन्तु कार्य क्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण, राजकार्य में अनुकूलता, आर्थिक संतुलन। किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा हानि होने की सम्भावना सचेत रहे। उद्योग-व्यापार में श्रमपूर्ण प्रगति, आकस्मिक खर्च होने के योग है। कार्य सिद्धि, शैक्षणिक उत्कर्ष, शत्रु विजय।

मिथुन राशि - मासारम्भ से ही मंगल इस राशि पर संचार करेगा जिससे विचारों में उग्रता, शक्ति संवर्धन, शत्रु विजय, नजदीकी बन्धु-कौटुम्ब से कलह, मानसिक तनाव, क्रोध अधिक आएगा। स्वास्थ्य सामान्य, दैवी कृपा का लाभ, संवाद से हर्ष, उद्योग व्यापार में श्रमपूर्ण सफलता मिलेगी।

कर्कटक राशि - मंगल-शनि का दुष्प्रभाव इस महीने में दिखेगा जिसके कारण परिश्रम एवं दौड़-धूप अधिक रहेगी। तनाव-विवाद, कार्यों में गतिरोग, मन अशान्त फिर भी सामान्य धन प्राप्ति होगी। कारोबार में कई तरह के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियाँ रहेंगी।

सिंह राशि - हर्षोल्लास सम्पूर्ण वातावरण, नौकरी व व्यापार में उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। व्यावहारिक कुशलता से समस्याओं का समाधान, अपने इष्ट मित्र, स्त्री-संतान से प्रसन्नता। परन्तु पारिवारिक एवं निजी उलझनों के कारण लाभ में कमी रहेंगी।

कन्या राशि - मासफल सामान्य, व्यर्थ की भागदौड़ एवं यात्राएँ होंगी जिससे मन परेशान, स्वास्थ्य बाधा, आर्थिक असंतुलन। आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होंगी। मन उदासीन रहेगा। विद्या-बुद्धि का विकास, रोजी-रोजगार में सामान्य सफलता, सामयिक-सामाजिक विकास। कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा।

तुला राशि - व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन-हानि एवं स्वास्थ्य नर्म रहेगा। नौकरी-व्यवसाय की स्थिति अनुकूल, विद्या में प्रगति, गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। मन में अशांति व क्रोध की मात्रा अधिक होगी। अधिकांश समय मनोरंजन एवं वृथा कामों में व्यतीत होगा।

वृश्चिक राशि - मंगल अष्टमस्थ रहने से घरेलु उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होगा। नौकरी-व्यवसायादि में सफलता, पद-प्रतिष्ठा की वृद्धि, इष्ट-मित्र का सहयोग। आमदनी से अधिक खर्च होगा। शनि ढैय्या रहने से परिवार में कुछ निजी समस्याओं का सामना रहेगा।

धनुष राशि - मंगल की दृष्टि रहने से उत्साह में वृद्धि एवं भाग्यवश कोई बिगड़ा काम बनेगा। स्वास्थ्य चिन्ता, तनाव-विवाद, उच्च वर्गीय व्यक्तियों से सम्पर्क वृद्धि, कार्य क्षेत्र में श्रमानुकूल सफलता, सम्मान लाभ, आर्थिक विकास, रोजी रोजगार में प्रगति, विद्या-बुद्धि का विकास। अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें, खर्च अधिक रहेगा।

मकर राशि - इस माह के पूर्वार्ध में मिली-जुली प्रभाव दिखेगा। स्वास्थ्य उत्तम, कार्यों में श्रमपूर्ण सफलता, आर्थिक-व्यापारिक प्रगतिशीलता, विरोधियों पर दबाव, गृह, भूमि, कृषि कार्यों में रुचि, उत्तरार्ध में सकारात्मक बढ़ेगी।

कुंभ राशि - मास फल मध्यम रहेगा। आपके ऊपर सूर्य की दृष्टि रहने से क्रोध अधिक, मानसिक तनाव तथा निकटस्थ बन्धुओं के साथ मतान्तर बढ़ेगी। सामयिक भोजन, वस्त्रादि कष्ट होगा, पारिवारिक उलझनों से त्रस्त रहेंगे। जल्दबाजी में निर्णय न ले हानिकारक होगा। किसी के ऊपर विश्वास न करें।

मीन राशि - शनि-साढेसाती के प्रभाव से व्यवसाय में अनिश्चितता बनी रहेगी। अपौष्टिक भोज्य पदार्थ खाने से स्वास्थ्य बाधा, अनावश्यक भाग दौड़ से परेशानी, सामाजिक कार्यों में प्रगति। आय कम व्यय अधिक होगा। परिवार में कुछ मनमुटाव, वैचारिक मतभेद, गुप्त शत्रुओं से सावधान। कोर्ट कचहरी का चक्कर लग सकता है।

(नीतिकथा)

भगवान की आराधना में बहुत शक्ति है - ध्रुव

- डॉ.जी.शेक षावली

एक बार की बात है, राजा उत्तानपाद थे और उनकी दो रानियाँ थीं। एक रानी का नाम सुनीति और दूसरी रानी का नाम सुरुचि था। सुनीति बड़ी रानी और सुरुचि छोटी रानी थी। रानी सुनीति के पुत्र का नाम ध्रुव और रानी सुरुचि के पुत्र का नाम उत्तम था। राजा उत्तानपाद का रूझान छोटी रानी सुरुचि के तरफ ज्यादा था, क्योंकि वे दिखने में काफी सुंदर थीं, लेकिन रानी सुरुचि अपनी सुंदरता पर काफी घमंड करती थीं। वहीं, बड़ी रानी सुनीति का स्वभाव सुरुचि से बिल्कुल अलग था। रानी सुनीति काफी शांत और समझदार स्वभाव की थीं। राजा का सुरुचि के तरफ अधिक प्रेम देखते हुए रानी सुनीति

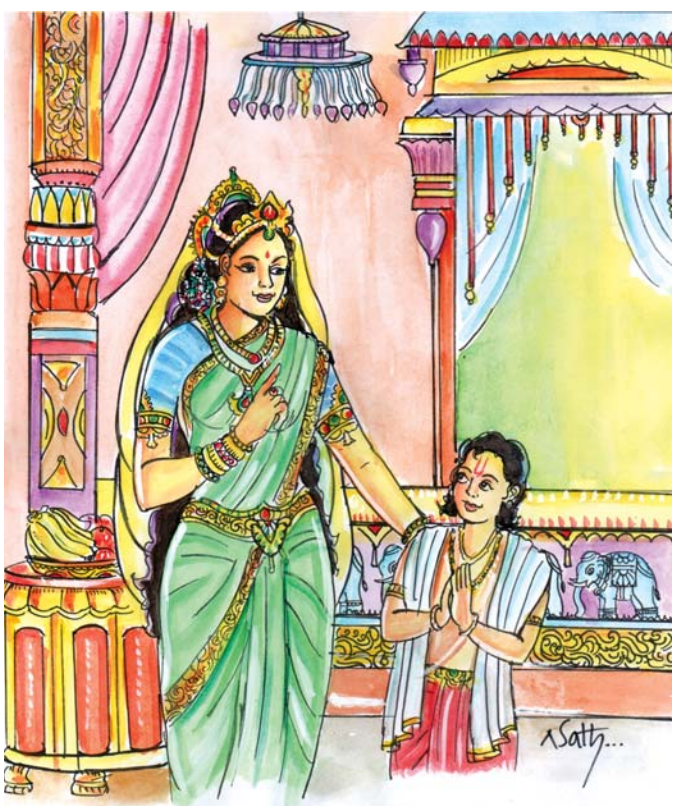

दुखी रहती थीं। इसलिए, वह अपना ज्यादा से ज्यादा वक्त भगवान की पूजा-अर्चना करते हुए बिताती थीं।

एक दिन सुनीति के पुत्र ध्रुव अचानक अपने पिता राजा उत्तानपाद के गोद में जाकर बैठ गए। वह अपने पिता के गोद में बैठकर खेल ही रहे थे कि वहाँ छोटी रानी सुरुचि पहुँच गईं। राजा के गोद में ध्रुव को बैठे देखकर रानी सुरुचि को गुस्सा आ गया।

रानी ने ध्रुव को राजा के गोद से नीचे उतारते हुए कहा, 'तुम राजा के गोद में नहीं बैठ सकते हो, राजा की गोद और सिहांसन पर सिर्फ मेरे पुत्र उत्तम का अधिकार है।' यह सुनकर ध्रुव को बहुत बुरा लगा। ध्रुव वहाँ से रोते हुए अपनी माँ के पास चला गया। ध्रुव को रोता देख माँ काफी चिंतित हो गई और ध्रुव से उसके रोने का कारण पूछा। ध्रुव ने रोते हुए सारी बात बताई। ध्रुव की बात सुनकर माँ के आंखों में भी आंसू आ गए। ध्रुव को चुप कराते हुए सुनीति ने कहा, 'भगवान की आराधना में बहुत शक्ति है। अगर सच्चे मन से आराधना की जाए, तो भगवान से तुम्हें पिता की गोद और सिंहासन दोनों मिल सकते हैं।' माँ की बात सुनकर ध्रुव ने निर्णय कर लिया कि वह सच्चे मन से भगवान की आराधना करेंगे।

ध्रुव अपने महल से भगवान की प्रार्थना करने जंगल की तरफ निकल पड़े। उन्हें रास्ते में ऋषि नारद मिले। छोटे-से ध्रुव को जंगल की तरफ जाता देख नारद ने उन्हें रोका। नारद ने उनसे पूछा, 'तुम जंगल

की तरफ क्यों जा रहे हो?' ध्रुव ने उन्हें बताया कि वो भगवान का ध्यान करने जा रहे हैं। ध्रुव की बात सुनकर नारद ने उन्हें समझाकर राजमहल वापस भेजने की कोशिश की, लेकिन ध्रुव ने उनकी एक न सुनी।

ध्रुव के निर्णय के कारण नारद ने ध्रुव को 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करने को कहा। इसके बाद ध्रुव जंगल में जाकर इस मंत्र का जाप करने लगे। उधर नारद ने महाराज उत्तानपाद को ध्रुव के बारे में बताया। बेटे के बारे में सुनकर महाराज का मन चिंतित हो गया। वह ध्रुव को वापस लाना चाहते थे, लेकिन नारद ने कहा ध्रुव तपस्या में डूब गया है और अब वह वापस नहीं आएगा।

उधर ध्रुव कठोर तपस्या में लगे रहें। कई दिन और महीने गुजर गए, लेकिन ध्रुव प्रार्थना करते रहे। इस बीच ध्रुव की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान हरि ध्रुव के सामने प्रकट हुए। भगवान हरि ने ध्रुव को वरदान देते हुए कहा, 'तुम्हारी तपस्या से हम बहुत प्रसन्न है, तुम्हें राज सुख मिलेगा। साथ ही तुम्हारा नाम और तुम्हारी भक्ति हमेशा के लिए जानी जाएगी।' यह कहकर भगवान ने ध्रुव को राजमहल की तरफ भेज दिया। भगवान के दर्शन पाकर ध्रुव भी बहुत खुश हुए और उन्हें प्रणाम कर महल की तरफ चले गए। बेटे को महल वापस आते देख राजा खुश हो गए और उनको अपना पूरा राज्य सौंप दिया। भगवान हरि के वरदान से भक्त ध्रुव का नाम अमर हो गया और आज भी उन्हें आसमान में सबसे ज्यादा चमकने वाले तारे 'ध्रुव तारे' के नाम से याद किया जाता है।

कहानी से सीख : इस कहानी से यही सीख मिलती है कि अगर धैर्य और सच्चे मन से कोई प्रार्थना करे, तो उसकी इच्छा जरूरी पूरी होती है।

जुलाई-2024 महीने का क्विज-24 के समाधान

1) कृष्णद्वैपायन, 2) श्री महाविष्णु,

3) मरकदवल्लि तायार, 4) जटायु तीर्थ,

5) भक्तवत्सल पेरुमाल, 6) विजयकोटि विमान,

7) अमनस्क योग, 8) पुष्पयाग,

9) शर्मिष्ठा, 10) देवयानी, 11) शर्मिष्ठा,

12) श्रुतदेवी, 13) शिशुपाल,

14) दमघोष, 15) शिशुपाल.

चित्रकथा

भगवान बालाजी की गवाही

तेलुगु मूल - डॉ.मन्नव गंगाधरप्रसाद

अनुवादक - डॉ.एम.रजनी

चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

रामय्या : इस तरह तुम कितने दिनों तक छुप कर फिरोगे? अदालत में देखलेंगे ऐसा मन में ही सोच लिया। 12
एक दिन नागभूषण ने रामय्या पर जो अदालत में पेश किया गया मुकदमा पूछताछ के लिए आया। 13
अदालत में न्यायाधीश ने पूछा कि तुम्हारे तरफ कोई वकील है क्या पूछने पर कहा कि न्याय मेरी तरफ है वकील की कोई जरूरत नहीं है। मैं ही स्वयं कारवाही करूँगा। 14
न्यायाधीश से नागभूषण 15
महाशय! ये रामय्या... मेरे पास से पैसे लेकर अब तक पूँजी और ब्याज मुझे नहीं लौटाया। मुझे इन्साफ करो। 16
तब रामय्या ने... न्यायाधीश से 17
महाशय मैं बहुत दिनों के पहले ही सारा कर्ज चुका दिया था। 18
लेकिन, एक साल से मेरा दस्तावेज मुझे न वापस देकर घुमा रहा है। फिर मुझ पर ही अन्याय से अदालत में मुकदमा पेश किया महाशय। 19
न्यायाधीश ने रामय्या से... पूछा कि 20
तुम पैसे वापस लौटाये जैसा कोई गवाही तुम्हारे पास है क्या? 21
रामय्या एक दम दंग हुआ। वह न्यायाधीश से कहने लगा कि बालाजी पर बडा ही भक्ति और श्रद्धा रखता हूँ। वह बालाजी ही मेरे लिए गवाही है साहब। पैसा मैं बहुत पहले ही वापस कर चुका हूँ। मुझ पर भरोसा करो। दोस्त मुझे धोखा देगा ऐसा मैं नहीं सोचा था। हाथ जोडकर उसने कहा कि आप ही मुझे बचाइए। 22
तुरंत न्यायाधीश ने पत्र को अच्छी तरह से जाँच कर फैसला इस प्रकार दिया। 23
न्यायाधीश : इस पत्र में कीमत के अनुसार मुहर नहीं लगाया गया। इसलिए यह पत्र फिजूल है। मैं इस मुकदमा को रद्द कर रहा हूँ। 24
नीति : तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामी अपने भक्तों की रक्षा स्वयं करते है, इसके लिए यही एक गवाही है। 25
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता...
....
मोबाइल नं...

क्विज-26

1) गणेश महाराज का माता-पिता का नाम क्या है?
ज)...

2) भाद्रपद शुक्ल द्वादशी के दिन किस ने अवतार लिया?
ज)...

3) हिडिंबासुर का बहन का नाम क्या है?
ज)...

4) हिडिंबा का असली नाम क्या है?
ज)...

5) भीम और हिडिंबा के पुत्र का नाम क्या है?
ज)...

6) इंद्र के वाहन का नाम क्या है?
ज)...

7) इंद्र देव का आयुध का नाम क्या है?
ज)...

8) सुनीति के पुत्र का नाम क्या है?
ज)...

9) ध्रुव के पिता का नाम क्या है?
ज)...

10) तिरुइडवेन्द्रै (तिरुविडन्द्रै) मंदिर के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)...

11) तिरुक्कडल मल्लै मंदिर के माताजी (तायार) का नाम क्या है?
ज)...

12) तिरुक्कडिकै शोलिंगपुरम मंदिर के मूलमूर्ति का नाम क्या है?
ज)...

13) अनंत पद्मनाभ व्रत कब मनाई जाती है?
ज)...

14) दैत्यगुरु का नाम क्या है?
ज)...

15) सुरुचि के पुत्र का नाम क्या है?
ज)...

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) सुनीति	अ) कश्यप
2) अदिति	आ) सिद्धि-बुद्धि
3) पार्वती	इ) उत्तानपाद
4) गणपति	ई) श्रीमहालक्ष्मी
5) श्रीमहाविष्णु	उ) परमेश्वर

1) इ 2) अ 3) उ 4) आ 5) ई

गणेश जी का मंत्र

वक्रतुंड महाकाय
सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरुमे देव
सर्वकार्येषु सर्वदा।

चित्रों को जोडिएँ

(a)

(b)

(c)

(d)

(e)
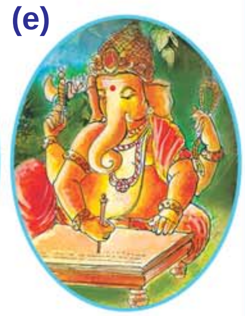

जवाब : a) 5, b)4, c)2, d)1, e)3.

(1)
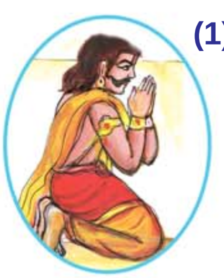

(2)

(3)
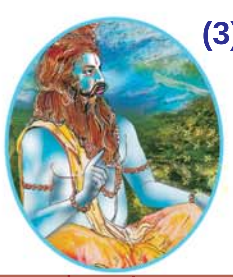

(4)

(5)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....
2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत
3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-
4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :
5. शुल्क का विवरण :
   धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
   भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359, 2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर : 2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 16-07-2024 को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में संपन्न आणिवर आस्थान कार्यक्रम में तिरुमल बडा जीयर स्वामीजी, छोटे जीयर स्वामीजी, ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., और जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., ने भाग लिया।

दि. 22-07-2024 को अप्पलायगुंटा, श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामीजी को संपन्न पुष्पयाग महोत्सव के दृश्य।

दि. 29-07-2024 को तमिलनाडु, तिरुत्तणि में स्थित श्री सुब्रह्मण्यस्वामी जी को 'आडिकृत्तिका' के अवसर पर ति.ति.दे. की ओर से रेशमी वस्त्र समर्पित करते हुए ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.

दि. 23-07-2024 को तिरुमल में स्थित कल्याणकट्टा (केश समर्पण केंद्र) को निरिक्षण करके, भक्तों से संपर्क करते हुए ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., और जे.ई.ओ. (एच&ई) श्रीमती एम.गौतमी, आई.ए.एस., और अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।

दि. 27-07-2024 को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में ति.ति.दे. के नूतन अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी के पद का कार्यभार को स्वीकारते हुए श्री सी.एच.वेंकय्या चौदरी, आई.आर.एस.। इस संदर्भ में भगवानजी का प्रसादों को देते हुए जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस.

दि. 07-08-2024 को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में ति.ति.दे. के नूतन मुख्य सुरक्षा व चौकसी अधिकारी के पद का कार्यभार को स्वीकारते हुए श्री एस.श्रीधर, आई.पी.एस.

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-08-2024 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.

श्री गोविंदराजस्वामीजी का पवित्रोत्सव, तिरुपति

(दि. 14-09-2024 से दि. 16-09-2024 तक)